ज्ञानामृत

फरवरी, 1989 वर्ष 24 ❋ अंक 8 मूल्य 1.75

कलकत्ता में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' सम्मेलन का उद्घाटन दृश्य।

अहमदाबाद– 'सुखमय संसार महोत्सव' का उद्घाटन दृश्य।

गुलबर्गा–'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के अन्तर्गत आयोजित सम्मेलन में मंच पर विराजमान हैं भ्राता एस० के० कान्ता भ्राता जी० के० ठाकरे, उपायुक्त, गुलबर्गा तथा अन्य वक्तागण।

हैदराबाद– 'न्यायाधीशों एवं आध्यात्मवेत्ताओं के सम्मेलन' में भाषण करते हुए न्यायाधीश माधव रेड्डी, भू० पू० मुख्य न्यायाधीश, आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय।

सोलन–रेणुका जी के मेले में 'सुखमय संसार' प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता वीरभद्र सिंह जी, मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश।

दिल्ली (कृष्णा नगर) में नव-निर्मित 'ओमशान्ति हाल' का उद्घाटन करते हुए दादी प्रकाशमणि जी, ज्ञानामृत के सम्पादक ब्र० कु० आत्मप्रकाश जी तथा अन्य प्रसन्नमुद्रा में खड़े हैं।

माउण्ट आबू–'स्मृति दिवस' (१८ जनवरी १९८९) पर प्रसिद्ध गीतकार ओम व्यास जी गीत प्रस्तुत करते हुए।

माउण्ट आबू–सर्वप्रिय ब्रह्मा बाबा के २०वें 'स्मृति दिवस' पर ब्रह्मा बाबा के प्रेरणाप्रद, शिक्षाओं से भरे चरित्रों को सुनाते हुए दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, ई० वि० वि०।

माउण्ट आबू :–विधान सभा सदस्यों का एक ग्रुप वि० वि० के मुख्यालय में दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य वरिष्ठ ब्र० कु० भाई बहनों के साथ।

अहमदाबाद 'सुखमय संसार महोत्सव' के अन्तर्गत आयोजित 'व्यापारी वर्ग सम्मेलन' में व्यापारियों को सम्बोधित करती हुई दादी जानकी जी।

साउथ अफ्रीका में ईश्वरीय सेवाओं हेतु पधारीं ब्र० कु० सुदेश बहन वहां के भाई-बहनों के साथ एक ग्रुप फोटो में।

भण्डारा सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र० कु० शांता बहन को सौगात देते हुए दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, ई० वि० वि०

अहमदाबाद 'सुखमय संसार महोत्सव' के अन्तर्गत आयोजित 'महिला सम्मेलन' में भाषण करते हुए बहन वसु भट्ट, भू० पू० रेडियो निदेशक।

कटक–सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में न्यायाधीश ए० एस० कुरेशी, न्यायाधीश ए० के० पधी, मुख्य न्यायाधीश एच० एल० अग्रवाल, भ्राता एस० एस० पाही, भू० पू० पुलिस महानिदेशक तथा अन्य एक ग्रुप फोटो में।

Regd No. 10563/65-D (E)-70

सांगली में आयोजित 'स्वर्णिम युग आध्यात्मिक मेला' के उद्घाटन समारोह में भाषण करते हुए ब्र० कु० विनायक भाई।

माऊण्ट आबू :–न्यूजीलैंड संसद के उपसभापति भ्राता जोहन टेरिस को इश्वरीय सौगात देते हुए दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, ई० वि० वि०।

कलकत्ता–सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता में विजेता भ्राता अनुपम बैनर्जी को प्रथम पुरस्कार देते हुए भ्राता पी० आर० अय्यर।

पुरी–स्वामी शंकरानन्द मठ के श्री सच्चिदानन्द सरस्वती जी सेवाकेन्द्र पर पधारे। ब्र० कु० निरुपमा बहन उन्हें ईश्वरीय सौगात देते हुए।

अमृत-सूची

१.	राजनीतिज्ञों एवं आध्यात्मवेत्ताओं के सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न	१
२.	संसार को सुखमय बनाने के लिए व्यवहार में सहयोग के अभाव के कारण और उनका निवारण	२
३.	'सम्पूर्णता के पथ पर ....'	५
४.	एकान्त	६
५.	'प्रभु-मिलन'—सत्यता या कल्पना? (एकांकी)	७
६.	राजयोग द्वारा आरोग्य	११
७.	श्री मन एवं श्री मति (चिन्तन)	१३
८.	अल्लाह की जादुई मुरली	१४
९.	सन्तुलित जीवन	१६
१०.	मानव की उन्नति का आधार—'आध्यात्मिक ज्ञान'	१८
११.	सर्व के सहयोग का बड़ा महत्त्व है (कविता)	१९
१२.	ईश्वरीय नियम एवं धारणाओं का महत्त्व	२०
१३.	अतीन्द्रिय सुख	२१
१४.	"... बसन्त बना रहे हैं हम" (कविता)	२२
१५.	बाबा की मेहरबानियां (दिव्य अनुभव)	२३
१६.	आपका भी स्वागतम् (कविता)	२४
१७.	ईश्वरीय बीमा कम्पनी (बेहद)	२५
१८	मधुबन की महिमा महान्!	२६
१९.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (सचित्र)	२८
२०.	'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार'—अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का आयोजन	३१
२१.	आइये, इस ईश्वरीय ब्यूटी पॉर्लर में	३२

'राजनीतिज्ञों एवं आध्यात्मवेत्ताओं के सम्मेलन' का आयोजन सम्पन्न

भोपाल : राजयोग भवन, भोपाल में द्विदिवसीय राजनीतिज्ञ एवं आध्यात्मवेत्ता सम्मेलन का आयोजन दिनांक २१–२२ जनवरी १९८९ को किया गया। उद्घाटन समारोह में दादी प्रकाशमणि जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि देश रूपी परिवार में राजनीतिज्ञ मात-पिता के समान हैं। अतः उनके चरित्र का प्रभाव जन सामान्य के हर वर्ग पर पड़ता है। उन्होंने बताया कि नेता का अर्थ है नीति पर चलने वाला। जब तक धर्म सत्ता और राज्यसत्ता रूपी दो हाथ आपस में मिलकर सहयोग नहीं देते तब तक कमल पुष्प समान पवित्र एवं सुखमय संसार की स्थापना नहीं हो सकती है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय उपमंत्री (श्रम एवं संसदीय कार्य) भ्राता राधा कृष्णन् मालवीय जी ने कहा कि "आध्यात्म एवं राजनीति एक दूसरे के पूरक हैं।" राजनीति का कार्य समाज में व्यवसाय बनाना है व आध्यात्मवाद लोगों को सद्गुणों को धारण करने की प्रेरणा देता है। यह सम्मेलन दोनों ही विद्याओं के समन्वय हेतु आयोजित है—इस बात की मुझे खुशी है। इसके अतिरिक्त म०प्र० शासन के वित्त एवं कृषि मंत्री भ्राता शिवभानु सोलंकी जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। भ्राता श्री ईश्वर सिंह चौहान, अध्यक्ष म०प्र० झुग्गी झोंपड़ी संघ भी इस समारोह में सम्मिलित हुए थे।

दादी चन्द्रमणि जी ने बताया कि हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख आदि अनेक दैहिक धर्म हैं, परन्तु हम सभी का असली धर्म तो

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

भोपाल में आयोजित 'राजनीतिज्ञों एवं आध्यात्मवेत्ताओं के सम्मेलन' का उद्घाटन दृश्य।

संसार को सुखमय बनाने के लिए व्यवहार में सहयोग के अभाव के कारण और उनका निवारण

'संसार' या 'जगत्' के विषय को लेकर लोगों ने अनेक प्रकार के दर्शन बना डाले और अनेक प्रकार के सिद्धांतों, नियमों या प्रयत्न-प्रणालियों का उल्लेख कर डाला। संसार में दुःख देखकर कुछेक ने तो यह कहा कि 'संसार बना ही नहीं है' अथवा 'यह जगत् मिथ्या है' अथवा 'यह स्वप्न मात्र है।' इसे मिथ्या मानते हुए भी वे 'जगद्गुरु' आदि जैसी उपाधियों से विभूषित भी होते रहे। "यह संसार **बना ही नहीं है**"—ऐसा कहते हुए भी वे प्राणायाम करके इसे भुलाने का यत्न-प्रयत्न करते रहे या इसे छोड़ने की भावना से वनों में चले गये, मानो कि जैसे वन जगत् का भाग ही नहीं है!

अन्य यह कहते रहे कि यह संसार तो सत्य है परन्तु इसका सुख 'काक-विष्ठा' के समान है। वे सुखों को विष्ठा के समान मानने के बावजूद भी अपने हर सत्संग या प्रवचन के अन्त में घोष करते समय यही कहते रहे कि "सर्वे भवन्तु **सुखिना**...।" जब सुख 'काक-विष्ठा' के समान है तो फिर इस प्रकार के नारों का अर्थ तो सभी के लिए एक घृणित एवं त्याज्य चीज़ के लिए कामना करना है!

अन्य कुछेक ने कहा कि यह संसार भी सत्य है, सुख भी सत्य है परन्तु यह संसार सदा से दुःखमय चला आया है और यहाँ जो सुख दिखाई देता भी है, वह दुःखान्तक है और उस सुख में सार नहीं है। इन्होंने कहा कि हमें स्वयं को यातना नहीं देनी चाहिए और कष्ट में नहीं डालना चाहिए बल्कि मध्यवर्ती मार्ग (Middle Path) अपनाना चाहिए, जिसका अर्थ यह हुआ कि मध्यवर्ती मार्ग ही सुख का मार्ग है। गोया इसे 'दुःखमय' बताते हुए भी वे 'मध्य मार्ग में सुख' मानते रहे!

इस प्रकार 'संसार' और 'सुख' के प्रश्न को लेकर अनेकानेक दर्शन और सिद्धान्त आज मिलते हैं तथा अनेक मार्ग और पंथ भी हैं परन्तु उन सिद्धान्तों में ही अन्तः विरोध है। उस-उस दर्शन का एक सिद्धान्त दूसरे सिद्धान्त के विपरीत है या तो सिद्धान्त और व्यवहार में परस्पर विरोध है। अतः अनेक दर्शन, सिद्धान्त, मत, पंथ होने के बावजूद भी संसार में दिनोंदिन दुःख बढ़ता चला गया है।

ऐसा नहीं है कि संसार सदा एक-सा रहा है या दुःख की मात्रा या दुःख के प्रकारान्तर यहाँ एक से रहे हैं बल्कि जन-संख्या और पदार्थ भी बढ़ते गये हैं और दुःख की मात्रा भी संसार में बढ़ती आयी है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि हम उत्तरोत्तर पीछे के समय पर विचार करें तो एक समय ऐसा भी था जब जन-संख्या भी बहुत कम थी और संसार में दुःख भी नहीं था। उसी को हम 'सुखमय संसार' या 'सतयुग' का समय कहते हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम यह समझें कि संसार को मिथ्या या सुख को काक-विष्ठा के समान या सुख को मिथ्या मानने की बजाय संसार को सुखमय बनाने का यत्न करें।

संसार में सहयोग का व्यवहार क्यों नहीं?

अब यह तो सभी मानेंगे कि संसार को सुखमय बनाने के लिए सभी के सहयोग की आवश्यकता है। संसार का सुखमय या दुःखमय होना हमारे ही कर्मों पर निर्भर करता है। अतः संसार को दुःखमय मानना भूल है क्योंकि दुःखमय तो वह तभी तक है जब तक हमारे कर्म ही ऐसे हैं कि जिनका परिणाम दुःख होना चाहिए। यदि हमारे कर्म अच्छे हों तो संसार फिर से सुखमय बन जायेगा। संसार तो सुख और दुःख दोनों का निमित्त या उपादान कारण बन सकता है। अतः यदि अब संसार को सुखमय बनाना है तो हम परस्पर उस लक्ष्य से एक-दूसरे को सहयोग दें। **जबकि 'कर्म-सिद्धान्त' अर्थात् 'कर्म और फल' का नियम अटल है तो जगत् को मिथ्या मानना या "संसार बना ही नहीं"—ऐसा मानना कर्म-सिद्धान्त को न मानने के तुल्य है क्योंकि यदि जगत् बना ही नहीं है तो न कर्म होगा, न फल मिलेगा! जगत् ही तो कर्म-क्षेत्र है और हमारी कर्मेन्द्रियाँ कर्म करने के लिए ही तो मिली हैं और जगत् ही में तो पुरुषार्थ भी हो सकता है?** अतः यह मान कर कि जगत् भी सत्य है, कर्म भी सत्य है, कर्मेन्द्रियाँ भी सत्य हैं, कर्म का फल (सुख या दुःख) भी सत्य है और संसार को सुखमय बनाने के लिए सहयोग भी जरूरी है, अब यह सोचने की आवश्यकता है कि मनुष्य व्यवहार में परस्पर सहयोग क्यों नहीं देते या लेते?

अब देखेंगे कि मनुष्य चार-पाँच ही मुख्य कारणों से दूसरों को सहयोग नहीं देता। (i) जिस व्यक्ति को सहयोग देने का प्रश्न हो या तो उसके प्रति **घृणा और द्वेष** हो तब वह उसे सहयोग नहीं देता। यह घृणा और द्वेष भी प्रायः उस व्यक्ति के प्रति ईर्ष्या के कारण होते हैं। जिस व्यक्ति से सहयोग की

अपेक्षा है वह यह सोचकर सहयोग नहीं देता कि यदि मैं सहयोग दूँगा तो यह व्यक्ति सहयोग के द्वारा अधिक यश, सफलता या लाभ प्राप्त करेगा। इस हसद, डाह या ईर्ष्या के कारण वह अपनी व्यस्तता, असमर्थता आदि का बहाना बनाकर या सीधे ही सहयोग देने से इन्कार कर देता है और मन ही मन में स्पष्ट या सूक्ष्म रूप से यह भावना लिये रहता है कि उस व्यक्ति को अधिक सफलता या यश प्राप्त न हो ! वह चाहता है कि वह व्यक्ति इससे अधिक सफल न हो! **दूसरे शब्दों में स्वार्थ के कारण ईर्ष्या और उससे द्वेष, असहयोग और अशुभ कामना आदि उत्पन्न होते हैं।**

(ii) कई बार मनुष्य इस कारण भी दूसरे को सहयोग नहीं देता कि दूसरा व्यक्ति भी प्रथम को समय पर सहयोग नहीं देता या वह प्रथम के साथ **दुर्व्यवहार करता है या अभिमान, कृतघ्नता** (Thanklessness) **या अकृतज्ञता** (एहसान-फ़रामोशी) **का व्यवहार करता** है। अतः प्रथम व्यक्ति कहता है कि मैं इसे सहयोग तो देता रहा हूँ और अब भी देने के लिए तैयार हूँ परन्तु यह व्यक्ति सहयोग लेने के योग्य नहीं है, इसलिए इसे सहयोग देने का मन नहीं होता।

(iii) सहयोग न देने का एक और भी कारण होता है। वह यह कि एक व्यक्ति का किसी दूसरे के प्रति बहुत **लगाव** है। इस लगाव के कारण वह चाहता है कि वह व्यक्ति फले-फूले, आगे बढ़े, यश कमाये और उन्नति को प्राप्त हो। वह तीसरे व्यक्ति को इस कारण सहयोग नहीं देता कि वह दूसरे व्यक्ति (जिससे कि उसका लगाव है) से अधिक सफल न हो, अधिक नाम न कमाये। या जिस से उसका **लगाव** है, वह ही उसको मना कर देता है कि इस तीसरे व्यक्ति को सहयोग मत देना क्योंकि उस दूसरे व्यक्ति की तीसरे व्यक्ति से **ईर्ष्या**, होड़ या जैलेसी (Jealousy) है। अतः प्रथम व्यक्ति दूसरे के कारण से मजबूर होकर सहयोग नहीं देता।

(iv) सहयोग न देने का एक कारण यह भी होता है कि प्रथम व्यक्ति सोचता है कि दूसरे को सहयोग देने से उसका कोई **सम्बन्ध या मतलब ही नहीं है।** वह सोचता है कि संसार में तो करोड़ों लोग हैं, हम किसको-किसको सहयोग दें जबकि हमारी अपनी सामर्थ्य सीमित है? जिससे हमें सहयोग मिलने वाला नहीं है या जिससे हमारा कोई **सम्बन्ध भी नहीं है**, उसको सहयोग देने की आवश्यकता ही क्या है?

ऊपर हमने सहयोग न देने के चार ही मुख्य कारण बताये हैं यद्यपि कारण और भी हो सकते हैं। अब हम उन चार कारणों पर विचार करना चाहते हैं। पहला कारण हम ने **घृणा और द्वेष** और उसके मूल में **ईर्ष्या** और उसके भी मूल में **स्वार्थ** बताया है। 'स्वार्थ' क्या है? दूसरों की बजाय स्वयं से अधिक प्यार होना ही स्वार्थ है। अपनी इच्छा पूरी करना और दूसरों का भला न सोचना—यह दूसरों के प्रति प्यार के अभाव का प्रतीक है और अपने ही में 'मोह' का द्योतक है। इस में गुप्त **मोह, लोभ** आदि छिपे हुए हैं जो कि सूक्ष्म रूप से देहाभिमान के सूचक हैं।

दूसरा कारण हमने यह बताया है कि जब कोई व्यक्ति दुर्व्यवहार करता है, अकृतज्ञ या कृतघ्न या अभिमानी होता है, उसको सहयोग देने का भी मन नहीं करता। दूसरे को अकृतज्ञ या कृतघ्न बताने का भाव तो यही है कि हम चाहते थे कि वह हमारी प्रशंसा करे, धन्यवाद करे, जहाँ कहीं चर्चा हो, हमारे गुण गाये परन्तु वह सहयोग लेकर भी चुप रहता है! अन्तोगत्वा इसका भी यही भाव निकला कि प्रशंसा या यश पाने का हमारा **स्वार्थ** था और वह स्वार्थ पूरा होते न देख कर अब आगे के लिए हम उस व्यक्ति को सहयोग नहीं देना चाहते। यदि वह व्यक्ति अभिमानी है या दुर्व्यवहार करता है तो सहयोग न देने पर तो वह और भी अधिक दुर्व्यवहार या कटु आलोचना या निन्दा करेगा और सफल होने पर अधिक अभिमान करेगा क्योंकि अब तो वह सहयोग के बिना ही अधिक सफलता को प्राप्त हुआ है। और, यदि वह सफल नहीं हुआ तो वह बद-दुआ, अभिशाप या निन्दा ही की वर्षा हम पर करेगा और इस व्यवहार से हम पहले ही तंग हैं परन्तु हम उसकी मात्रा और बढ़ाने का ही काम कर रहे हैं! हमें सोचना चाहिए कि जो व्यक्ति अभिमानी है अथवा दुर्व्यवहार करता है, उसका तो मन रोगी है अथवा विवेक अपाहिज है अथवा निर्बल है और रोगी, अपाहिज तथा निर्बल तो दया के पात्र और सेवा के अधिकारी होते हैं। परन्तु चूँकि अभिमानी व्यक्ति दूसरे की महिमा नहीं करता, और हमारा यश का स्वार्थ पूरा नहीं होता इसलिए उस द्वारा अपनी महिमा न सुनने के कारण हम यह कह कर कि वह अभिमानी है, उसे अपने सहयोग के दायरे से बहिष्कृत कर देते हैं।

हाँ, कुछ व्यक्ति सचमुच ही अभिमानी और दुर्व्यवहार तथा तिरस्कार करने वाले होते हैं। उनको यदि हम और सहयोग नहीं दे सकते तो कम-से-कम शुभ भावना और शुभ कामना रूप सहयोग तो दे ही सकते हैं।

सहयोग न देने का तीसरा कारण हम ने यह बताया है कि व्यक्ति का किसी से **लगाव** होता है और वह लगाव वाले को ही आगे बढ़ाना चाहता है और इसलिए अन्य से द्वेष, ईर्ष्या आदि करता है। जिससे लगाव होता है, उसका कारण क्या है? यही कि उससे हमारा कुछ स्वार्थ पूरा होता है। लगाव और स्वार्थ दोनों ही मोह के प्रतीक और विवेक के मलिन होने के प्रतीक हैं।

चौथा कारण हमने यह बताया है कि हम यह मान लेते हैं कि

अमुक व्यक्ति से हमारा कोई **सम्बन्ध या मतलब** नहीं है या कि केवल हमारे सहयोग देने से क्या होगा। हमारे सहयोग देने से विश्व थोड़े ही अच्छा बन जायेगा? अब जहाँ तक सम्बन्ध की बात है, हमें समझना चाहिए कि आत्मिक नाते से तो विश्व ही एक परिवार है और हम सभी का भाई-भाई का सम्बन्ध है और यदि हम इस सम्बन्ध को नहीं समझते तो गोया हम देहाभिमानी हैं और संकुचित विचार के हैं और यदि हम यह समझते हैं कि केवल हमारे सहयोग से संसार का कुछ भला होने वाला नहीं है तो हम इस सत्य को भूल जाते हैं कि एक-एक बूंद से तालाब भरता है और कि व्यक्ति ही समाज की इकाई है।

अतः सभी प्रकार से हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सभी को सहयोग देना ही चाहिए और कि सभी के प्रति **संहयोग वृत्ति होने से ही हम ईर्ष्या, घृणा, द्वेष, मोह और स्वार्थ, जिनका हम ने ऊपर उल्लेख किया है, से मुक्त हो सकते हैं। अतः सहयोगी होने अथवा सहयोग वृत्ति होने में हमारा कल्याण है। पुनश्च, हमें यह भी समझना चाहिए कि संसार के सुखमय होने में ही हमारा भी सुख समाया हुआ है, अतः उसको दृष्टि में रख कर भी हमें सहयोग देना चाहिए। यदि संसार सुखमय नहीं होगा तो हमें भी पूर्ण रूप से सुख नहीं हो सकता क्योंकि हमारा लेन-देन तथा व्यवहार और कारोबार तो संसार ही के लोगों से होना है।**

क्या सहयोग दें?

अब प्रश्न यह है कि हम सभी क्या सहयोग दें? कोई वैज्ञानिक हो या न्यायविद, विद्यार्थी हो या व्यापारी, घूम-फिर कर बात यहीं आकर टिकती है कि सभी को मानवी मूल्यों अथवा नैतिक नियमों का पालन करना चाहिए क्योंकि एक तो इनसे मनुष्य के कर्म ऐसे अच्छे होते हैं कि जिनका फल सुख होता है, दूसरे, मनुष्य के सभी से सम्बन्ध ऐसे होते हैं कि जिनसे तनाव या घृणा, भय आदि पैदा न हों बल्कि सुख हो। इस प्रकार का सहयोग देने में तो व्यक्ति का अपना ही कल्याण है और यह तो गोया स्वयं को ही सहयोग देना है और इस द्वारा संसार सुखमय बनने से फिर और भी अधिक लाभ है।

—जगदीश

पोखरा—नेपाल नरेश श्री ५ वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव के ४४वें शुभ जन्मोत्सव पर निकाली गई झाँकियों में ई० वि० वि० की झांकी प्रथम रही। भू० पू० पर्यटन मंत्री भ्राता गणेश शेरचन जी से प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए ब्र० कु० सुरेन्द्र बहन।

अहमदाबाद में आयोजित 'साहित्यकार सम्मेलन' में भाषण करते हुए ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी, मुख्य सम्पादक, ज्ञानामृत।

तानसेन (नेपाल)—निर्माण तथा यातायात मंत्री भ्राता दीपक बोहरा जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र० कु० कमला बहन।

कटक—भ्राता आर० के० रथ, अतिरिक्त मुख्य सचिव, उड़ीसा तथा अन्य को 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना की जानकारी देते हुए ब्र० कु० कमलेश बहन।

सम्पूर्णता के पथ पर....

ब्र०कु० सूरजमुखी, रुद्रपुर

उन आत्माओं को जिन्होंने 'सम्पूर्णता' का महान् दिव्य पथ चुना, भगवान् आह्वान कर रहे हैं—

सम्पूर्णता के पथ पर बच्चो दिखाओ चलके,
ये लक्ष्य है तुम्हारा, देवता तुम्हीं हो कल के।

जब सृष्टि विकारों की अग्नि से तप जाती है आत्माएँ पुकारने लगती हैं, जीवन की सुख-शान्ति अधर्म के हाथों छिन जाती है, गम की घटायें हर मन पर छा जाती हैं। हर दिल पर दुःखों के बादल बरसने लगते हैं—तूफ़ानों की आँधी में बुझे चिरागों को पुनः नव ज्योति प्रदान करने, पुकारने वालों को पुचकार देने—ढूंढ़ने वालों को राह दिखाने, तड़फने वालों को तृप्त करने वाला हम सभी का प्यारा, हमें महान् लक्ष्य देने वाला जब स्वयं धरा पर आता है तब एक यही पथ रह जाता है मंजिल पर पहुँचने का जिसमें सम्पूर्णता का खजाना भरा है, जिसमें परम आनन्द है, अथाह सुख है, अपार शान्ति है, अनोखा अनुभव है!

अवश्य ही सम्पूर्णता के महान् पथिक, जिन्होंने भारत-भूमि को देव भूमि बनाने का संकल्प किया, विकारों को भगाने की चुनौती दी, नवयुग रचने का बीड़ा उठाया—अवश्य ही उनके महान् इरादे उनके साथ होंगे, उनके ऊँचे विचार होंगे, उन्होंने अपनी महानताओं को जाना होगा, अपनी शक्तियों को पहचाना होगा। तभी तो उनकी भगवान् ने आकर महिमा की, उनके साथ भगवान् इस कार्य में सहयोगी बन गये। उनसे साथ निभाने का वायदा भगवान् ने किया—क्या ये साधारण बात है? नहीं। वह सर्वोच्च सत्ता, ऊँची हस्ती यदि किसी के साथ हो, तो जिनके वो साथ हैं, वो कितने महान् होंगे!

उनका मन तृप्त होगा

प्रभु-मिलन की प्यासी आत्मायें आज पूर्ण तृप्त होंगी। जिन्होंने प्रतिदिन ज्ञान के अनमोल अमृत से मन भरपूर किया होगा, उनका ये पथ अति सरल बन गया होगा। जिन्होंने भगवान् के साथ रहने की अन्तिम इच्छा रखी होगी, जिन्होंने मन के मीत को पहचान लिया होगा, उनके ही ये गीत होंगे—

गुजारे थे हमने यूं ही दिन वर्ष पाँच हजार के,
जानते नहीं थे कि हम ही थे पात्र बाबा तुम्हारे प्यार के।

जो एक बार प्रभु-प्यार का पात्र बन गया, उसका जीवन ही परिवर्तन हो गया, उसकी सर्व इच्छायें पूर्ण हो गयीं, उसे उसकी मंजिल मिल गयी, उसके सब सपने साकार हो गये। तभी तो आत्माओं ने सम्पूर्णता को, दैवी स्वराज्य को लाने का—इस विकारी राज्य में दावा किया है।

हर परिस्थिति का स्वागत हो

प्रत्येक मनुष्य परिस्थितियों से गुजरता है। इतना ही नहीं, परिस्थिति जीवन-परीक्षा भी बन जाती है। भगवान् के बच्चों में और संसार की आत्माओं में यही तो अन्तर है कि जिस समय लोग परिस्थितियों से परेशान होते हैं, उस समय ये पथिक स्वस्थिति की शान में होते हैं।

चारों विषयों (Subjects) में सम्पन्न हों

ईश्वरीय जीवन अनमोल है। कोई भी कारण ईश्वरीय जीवन का मूल्य न बन जाये, उसके लिए परमशिक्षक शिव बाबा ने हमें जो मधुर शिक्षाएं दी हैं उनके ही ये चार विषय हैं—(१) ज्ञान-रत्नों से बुद्धि रूपी झोली भरपूर हो। (२) कम से कम आठ घन्टे ईश्वरीय याद में बीतें और योग-युक्त कर्म हों (३) सेवाओं में निःस्वार्थ, निष्काम सेवा हो। सेवाओं की सफलता बाबा को अर्पण होती रहे, मन ख़ुशी से भरपूर रहे। बाबा के शब्दों में—यदि सेवा क्षेत्र में 'मैं-पन' आ गया तो समझो सेवा का गुलदस्ता ही मुरझा गया। (४) पवित्रता दिव्य गुणों की खान है। पवित्र मन से, वचन से व कर्म से स्वतः ही सेवा होगी। हमारी धारणाएं इतनी दृढ़ हों जो कि हमारी धारणाएं ही सभी का दर्पण बन जायें। धारणाएं ही आत्मा को महानता के शिखर पर ले जाती हैं।

स्वयं की शक्तियों पर विश्वास हो

आत्मा को चैतन्य शक्ति सभी ने माना है। आत्मा स्वयं शक्तिस्वरूप है। परन्तु आत्मा को अपनी शक्तियों पर भरोसा होना भी इतना ही आवश्यक है जितना कि ईश्वरीय पथ पर चलने के लिए स्वयं की यथार्थ पहचान। जिसे स्वयं की शक्तियों पर विश्वास नहीं हुआ, वो ईश्वरीय शक्तियों को कैसे प्राप्त कर सकेंगे?

अन्तकाल के अन्तिम चरण में अन्तिम जन्म की अन्तिम जीवन यात्रा पर चलते हुए प्रत्येक ईश्वरीय सन्तान को यह याद रहे—'**भगवान् की अन्तिम इच्छा ही हमारी सम्पूर्णता है**'। भगवान् की इच्छाओं को भगवान् की शुभकामनायें हमारे द्वारा ही पूर्ण करें। हम इस चुने हुए पथ की मंजिल की ओर तीव्र गति से बढ़ें ताकि सम्पूर्णता के पथ पर चलने वालों की विश्व में फिर से जयजयकार हो उठे?

एकान्त

वर्तमान के इस भीड़ भरे वातावरण में प्रायः सभी लोग सुबह से शाम घर, कार्यालय, दुनियादारी तथा अन्य कार्यों में अपने को व्यस्त रखते हैं। यदि किन्हीं को 'सत्संग' अथवा 'आध्यात्मिक कार्यक्रम' में आने के लिये निमन्त्रण देते हैं तो मैजारिटी लोगों से यही उत्तर मिलता है—'देखिये, हम वायदा नहीं करते, हो सकेगा तो आयेंगे।' और यदि कुछ दिनों के बाद उनसे पूछा जाए कि जनाब, क्यों नहीं आए? तो उतर मिलेगा—'सारी, बिजी (व्यस्त) हो गया था। इसलिये नहीं आ पाया।'

स्वयं को व्यस्त रखना एक अच्छी आदत है लेकिन निरर्थक कार्यों में व्यस्त रहकर अपने अपको आलसी बना लेना एवं समय गंवा देना तो घातक है। ऐसे कार्य जो आवश्यक नहीं हैं, जो मन की शान्ति, सुख का अनुभव नहीं करा सकते, जैसे कि अनावश्यक चौराहे पर खड़े रहकर इधर-उधर की बातें करते रहना और नगरपालिका की सड़क को पान की पीक से लाल करते रहना, हर आने-जाने वाले पर निगाह रखना, फिर उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना आदि व्यर्थ के कार्यों में समय को गंदा कर व्यस्तता का दिखावा करना तो स्वयं के लिये, आत्मोत्थान के लिये घातक ही सिद्ध होगा।

इन्हीं अनावश्यक कर्मों ने मनुष्य को एक दर्शन से हटा दिया है, वह है—'आत्मदर्शन'। मेरे पास समय नहीं है (समय तो २४ घंटे का है, चाहे तो बहुत समय निकल सकता है) यह एक आम भाषा हो गयी है और व्यस्तता और समयाभाव ने मनुष्य को मानसिक तनाव देकर ढेर सारे नशीले पदार्थ लेने को मजबूर कर दिया है। आत्मोत्थान के लिए समय नहीं है—देह के लिये रात-दिन है।

इन्हीं व्यस्तता भरे दिनों में से आधा घंटा भी स्वयं (आत्मा) के लिये निकालो और एकान्त में स्वयं से पूछो—क्या मैं आत्मावलोकन करता हूँ? क्या कभी एकांत में बैठकर चिन्तन करता हूँ? समस्याओं के बारे में सोचा है? यह मनन किया है कि मेरी कौनसी ऐसी समस्या है कि जिससे मेरा मन अशांत है? मेरे कार्य से किसी की क्षति तो नहीं होगी? मेरे कार्य सकारात्मक हैं? मैं क्यों परेशान हूँ? यह शरीर भी मेरा नहीं है, मैं यहां अस्थाई आया हूँ। मैं संसार के लिये स्थाई हूँ? मैं जिनके लिये कर रहा हूँ क्या वे मेरे पाप कर्मों में भी साक्षी हैं? मैं क्यों अपेक्षा और उपेक्षा में जीकर तनावमय जीवन जी रहा हूँ? कहाँ तक मैं औरों को सुख दे रहा हूँ?

कहने का तात्पर्य यह है कि सारे प्रश्नों का समाधान एकांत में बैठकर प्रभु के सामने कहो, अपने मन से कहो। यदि आधा घंटा भी ऐसा पुरुषार्थ किया तो मानसिक तनाव से बच सकते हैं। कई बड़े-बड़े मनीषियों, संगीतज्ञों, वैज्ञानिकों ने जो प्राप्त किया वह कई दिनों की एकांत साधना से प्राप्त किया और फिर औरों को बांटा।

इसलिये दुनिया की ऊहापोह से दूर होकर प्रतिदिन आधा घंटा एकांत में बैठने की आदत डालनी चाहिये। यह 'एकांत' मन की खुराक है। एकांत में ही ईश्वर में मन लगेगा और सर्व सिद्धि, सर्व प्राप्तियां सहज ही प्राप्त हो सकेंगी।

अब प्रश्न उठता है कि एकान्त क्या है? क्या संसार को छोड़ दूर कहीं जंगल में या पहाड़ पर या सागर किनारे योगासन लगाकर बैठें? ऐसा जरूरी नहीं है। हम अपने ही घर में एक की याद में रहें अर्थात एक (प्रभु) के अन्त में टिक जाएं। ऐसा तभी हो सकता है जब हम अपने मन को परमात्मा के साथ जोड़ कर रखें। इसके लिए राजयोग का अभ्यास बहुत जरूरी है। क्योंकि राजयोग आत्मा और परमात्मा का महामिलन कराके परमात्म-अनुभूति में टिका देता है। जिस कारण व्यक्ति अपने घर परिवार में रहकर, दुनियादारी में रहकर भी अपने आपको एकान्त अनुभव करता है और इस भीड़ भरी दुनिया, हलचल की दुनिया में भी सच्ची मन की शान्ति को प्राप्त कर सर्व प्राप्ति की अनुभूति करता है।

ब्र० कु० सुभाष, उज्जैन

जालन्धर—स्थानीय रोटरी क्लब में प्रवचन करते हुए ब्र० कु० कृष्णा बहन।

अंबरनाथ—भ्राता हेबले, फिल्म प्रोड्यूसर को परमात्मा का परिचय देते हुए ब्र० कु० मीना बहन।

एकांकी

'प्रभु-मिलन'– सत्यता या कल्पना ?

ब्र०कु० सूर्य, माउण्ट-आबू

पात्र :–

प्रोफेसर रामानन्द – हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रोफेसर चटर्जी – भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष
मीरा – रामानन्द की पत्नी, इंग्लिश की प्रवक्ता
ब्रह्माकुमारी गीता – राजयोग शिक्षिका

प्रथम दृश्य

(कालेज का एक बड़ा कक्ष, कुछ मेज व कुर्सियां लगी हुई हैं। दीवारों पर कुछ महान् पुरुषों के चित्र टंगे हैं। चटर्जी शान्त-मुद्रा में कहीं खोये हुए से कुर्सी पर बैठे हैं। उनके चेहरे पर तेज है, मन अति प्रसन्न दिखाई दे रहा है।)

रामानन्द – कहो, मिस्टर चटर्जी, क्या बात है, आज बड़े ही गम्भीर व प्रसन्न दिखाई दे रहे हो?

चटर्जी – हाँ, आज मन अति प्रसन्न है, खुशी की सीमा नहीं।

रामानन्द – क्यों, क्या मिल गया? क्या कोई अजनबी घटना घट गई?

चटर्जी – रामानन्द जी, शायद आपको आश्चर्य हो, हो सकता है आपको विश्वास न भी हो, परन्तु महान् आश्चर्य हुआ, मेरे जीवन की सर्वश्रेष्ठ घटना···

रामानन्द – आप जरूर कहो, मुझे विश्वास होगा।

चटर्जी – रामानन्द जी, मनुष्यों की कल्पना से परे की बात है। मैं बार-बार उस दृश्य का स्मरण कर आनन्दित हो रहा हूँ। मेरे कोई महान् पुण्य उदय हो गये!

रामानन्द – अब रहस्य को और रहस्य न बनाओ चटर्जी साहब, रहस्य खोलो। सचमुच, आपका आनन्द हमें भी आनन्दित कर रहा है।

(चटर्जी पुनः कुछ क्षण उसी दृश्य में खो जाते हैं।)

रामानन्द – कहो, मित्र कहो, हमारी जिज्ञासा तीव्र हो रही है।

चटर्जी – ओह··· सोच रहा था कि संसार में सबसे आश्चर्यजनक घटना घट रही है और करोड़ों लोग अनभिज्ञ हैं। कितना महान् आश्चर्य, काश··· सभी को पता हो!

रामानन्द – पता, कहो तो सही भई, हमारी जिज्ञासा धीरज लाँघ रही है।

चटर्जी – तो सुनो दोस्त, सृष्टि पर सर्वशक्तिवान का अवतरण मैंने इन नयनों से देखा। मैंने उस प्राणेश्वर परमपिता से बातें की, मैं उस आनन्द के सागर की लहरों में आनन्दित हो गया। मैंने उसे प्रत्यक्ष देखा। ओह, दिल चाहता है, उस दृश्य को देखता ही रहूँ, देखता ही रहूँ···

रामानन्द – कहाँ देखा आपने ये सब? कहीं आपको भ्रम तो नहीं हो गया? एक वर्ष से आप ब्रह्माकुमारियों की चर्चा करते रहते हो, परन्तु आज आप ये क्या कह रहे हो···

चटर्जी – हाँ रामानन्द जी, मैंने एक वर्ष से वहाँ से ज्ञान प्राप्त किया, ब्रह्मचर्य व्रत अपनाया। मैं इन छुट्टियों में माउण्ट-आबू गया था और वहीं हुआ ये ईश्वरीय मिलन···

रामानन्द – चटर्जी साहब, इन ब्रह्माकुमारियों का तो जादू प्रसिद्ध है। लगता है आप पर भी असर हो गया। कहीं सपना तो नहीं देखा आपने··· लगता है उन्होंने आपको हिप्नोटाइज कर दिया है···

चटर्जी – सपना नहीं बन्धु, सम्पूर्ण सत्य काश कि आप भी मेरे साथ होते!

रामानन्द – आपने मुझे बताया नहीं···

चटर्जी – बताकर क्या करता, वहाँ वही व्यक्ति जा सकता है जिसने कम से कम एक वर्ष तक पवित्रता का पालन व राजयोग का अभ्यास किया हो।

रामानन्द – परन्तु यह तो मात्र भ्रम है। आप विज्ञान के आदमी इस भ्रम जाल में कैसे फँस गये! कहाँ तो आप धर्म को ढोंग कहते थे, अन्धश्रद्धा कहते थे, हमारी एक नहीं सुनते थे और आज आप इन ब्रह्माकुमारियों के चक्कर में···

चटर्जी – विज्ञान की तर्क-युक्त बुद्धि ने ही मुझे ब्रह्माकुमारियों के आध्यात्मवाद की ओर खींचा। वहाँ अन्धश्रद्धा नहीं, सत्य ज्ञान है। वहाँ मैंने ईश्वरीय अनुभूति के अनुपम क्षण बिताये! यह न भ्रम है, न जादू। क्या जादू से परम आनन्द की प्राप्ति हो सकती है, क्या भ्रम से ब्रह्मचर्य का पालन हो सकता है, क्या हिप्नोटिज़्म से चेहरे पर तेज आ सकता है?

जादू किसी एक व्यक्ति पर हो सकता है। वहाँ तो हजारों बुद्धिमान व्यक्ति मौजूद थे, अनेक विद्वान विद्यमान थे। वहाँ कोई चमत्कार भी नहीं था, स्पष्ट अनुभव था।

रामानन्द – अरे भाई, आप किसी महान् व्यक्ति से मिले होंगे। भगवान् का मिलना इतना सहज कहाँ है! आपने तो

कोई भक्ति भी नहीं की। ऋषि-मुनि हजारों वर्ष तक तपस्या करते रहे, परन्तु प्रभु मिलन नहीं हो सका। सुना है मीरा को भी श्रीकृष्ण के क्षणिक दर्शन हुए। हमने भी सारे वेद, दर्शन कण्ठस्थ कर लिए, परन्तु···

चटर्जी – आप सत्य कहते हैं बन्धु। परन्तु यह तो बताओ, जब स्वयं श्री कृष्ण इस धरा पर उपस्थित थे, तब उनके दर्शन कठिन थे या क्षणिक थे?

रामानन्द – तब तो वे थे ही यहाँ। उनके दर्शनों के लिए किसी तपस्या की जरूरत नहीं थी। परन्तु फिर भी आसुरी सम्पदा वाले लोग उन्हें न पहचान सके व अन्ततः विनाश को प्राप्त हुए।

चटर्जी – (हँसते हुए) तो वही घटना तो पुनरावृत्त हो रही है। प्रभु स्वयं अवतरित होते हैं। कोई उनसे मिल रहे हैं और कोई अज्ञान-वश दूर हैं।

रामानन्द – विश्वास नहीं होता चटर्जी साहब। हमने तो कितने ही नामीग्रामी महात्माओं से भेंट की है, वार्तालाप किया है। परन्तु अच्छे-अच्छे संत भी प्रभु-मिलन को दूर की मंज़िल ही समझते हैं। फिर आपने तो कोई तपस्या भी नहीं की।

चटर्जी – **हमने इस जन्म में तो भक्ति नहीं की, क्योंकि हमें सत्य की तलाश थी, परन्तु यह ईश्वरीय मिलन हमारी जन्म-जन्म की भक्ति का ही फल है। आपको पता ही है कि अनेक जन्मों की भक्ति के बाद ही भगवान् मिलते हैं। वे अपने अनन्य भक्तों से मिलने के लिए स्वयं ही आते हैं।**

रामानन्द – **हाँ, सुना तो यही है, परन्तु भगवान् से मिलन इतना सहज कहाँ है?**

चटर्जी – यह तर्क का विषय नहीं, अनुभव की बात है। आप भी अनुभव करके देख लें। मैं विज्ञान का व्यक्ति होने के नाते यों ही किसी बात को नहीं मान लेता। परन्तु सत्य को देखने के बाद उससे इन्कार कैसे किया जा सकता है।

रामानन्द – (हँसी के भाव में) चलो, मुझे भी भगवान् से मिलाओ।

चटर्जी – ईश्वरीय मिलन के लिए पहले उसका सम्पूर्ण ज्ञान लेना होगा, फिर एक वर्ष पवित्रता अपनानी होगी, तब आप उस परम सौभाग्य के पात्र बन सकेंगे।

रामानन्द – ज्ञान तो मेरे पास समस्त है, सारे शास्त्र कण्ठस्थ हैं।

चटर्जी – फिर भी रोज कहते हो–हे प्रभु··· मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो···। इसका अर्थ? अभी अन्धकार है। तो बिना ज्ञान-चक्षु के प्रभु को कैसे देख पाओगे!

रामानन्द – वे ज्ञान-चक्षु कहाँ से प्राप्त होंगे?

चटर्जी – आप गीता के विदुषक हैं, जरा याद करो–"हे अर्जुन, तू मेरे द्वारा ही मेरे को जान।" क्या विराट स्वरूप दिखाकर भगवान् ने अर्जुन को नहीं कहा–"हे वत्स, न वेद से, न शास्त्र से, न यज्ञ से, न तप से, न दान से, न पुण्य से, तेरे सिवाय कोई भी मेरा यह स्वरूप नहीं देख सका।"

रामानन्द – हाँ, बात तो अति गहन है। परमात्मा के दर्शन तो उसकी कृपा से ही सम्भव हैं।

चटर्जी – तो अब वह स्वयं कृपा करके अपना सत्य ज्ञान दे रहे हैं। उस ज्ञान को आप ब्रह्माकुमारी बहनों से लो। आपको अपने अहं का त्याग करना होगा।

रामानन्द – आज आपकी बातें कुछ ठोस लग रही हैं। यदि सचमुच प्रभु-मिलन सम्भव है तो मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। चटर्जी साहब, आपका अनुभव आपके चेहरे द्वारा प्रतिभासित हो रहा है। आपके चेहरे पर झलकता ब्रह्म तेज आपके ईश्वरीय मिलन का प्रत्यक्ष उदाहरण है। तर्क की जरूरत ही नहीं। आप मेरे कोर्स का प्रबन्ध करो। आज मुझे बरबस भगवान् की ओर कशिश हो रही है। मैं उन्हें एक बार प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ।

चटर्जी – भाग्यशाली हैं आप। मीरा बहन को भी साथ लाना। कल शाम ६.०० बजे आश्रम चलेंगे।

दूसरा दृश्य

(मीरा घर में बैठी है। कुछ साहित्य पढ़ रही है। उसी कक्ष में दो चारपाई पड़ी हैं जिन पर दो बच्चे सोये हैं। रामानन्द जी घर में प्रवेश करते हैं।)

रामानन्द (मीरा से) – हमारे मित्र चटर्जी माउण्ट-आबू ब्रह्माकुमारी आश्रम में रह कर आये हैं। आज तक तो हम उनकी बातों पर विश्वास नहीं करते थे, परन्तु आज उनके अनुभव सुनकर लगा कि यह सत्य है कि उन्हें ईश्वरीय प्राप्तियाँ हुई हैं।

मीरा – आप भी बड़े भोले हो। **वे तो एक वर्ष से** बड़ी-बड़ी बातें करते थे, कुछ समझ में नहीं आता।

रामानन्द – मीरा देवी, आज उनके चेहरे पर **मैंने वही तेज** देखा जो ऋषियों के चेहरों पर ब्रह्म-तेज के नाम से प्रख्यात था। आप मेरा साथ दो।

मीरा – मतलब क्या, मैं तो आपके साथ हूँ ही···

रामानन्द – चटर्जी साहब कहते हैं–७ दिन का **ईश्वरीय** कोर्स करो व एक वर्ष पवित्र जीवन बिताओ तो आप भी ईश्वरीय मिलन का श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त कर सकते हो।

मीरा – कहीं आप पागल तो नहीं हो गये। **ब्रह्मचर्य पालन करना खेल है क्या? बड़े-बड़े महात्मा भी फेल हैं। हमसे** ये नहीं होगा, उनसे कहो–बस तुम्हीं करो।

रामानन्द – मीरा, तुम बहुत समझदार हो। हमने २५ वर्ष गृहस्थ के भोगे। यदि तुम चाहो तो पवित्र जीवन सहज हो

सकता है। एक वर्ष की ही तो बात है, कोई जीवन भर का तो ठेका नहीं है। यदि हमें भगवान् मिल जायें तो कमाल हो जाए। मीरा, यदि ऐसा हो जाए तब तो तुम मीरा से भी महान् कहलाओ।

मीरा (भावुकता में) – मुख के लड्डू खाते हो। घर बैठे मिलेंगे तुम्हें भगवान...!

रामानन्द – देवी, तुम मेरा कहना मानो। तुमने मेरा हर समय साथ दिया है। तुम मेरी सच्ची साथी हो। चलो दोनों ही ज्ञान लेंगे। अच्छा लगा तो लेंगे, नहीं तो छोड़ देंगे।

मीरा (चिन्तन मुद्रा में) – आपकी बात मेरी समझ में नहीं आती। यह कौनसा रास्ता आप चुन रहे हैं। पहले गृहस्थ तो पूरा करो।

रामानन्द – नहीं देवी, मेरा मन प्रेरित हो उठा है, यही शुभ लक्षण हैं। मैं करबद्ध होकर आपसे विनती करता हूँ, आप मेरा साथ दो। मैं जीवन भर आपका एहसान-मन्द रहूँगा।

मीरा – लगता है आपको किसी ने बहका दिया, भला यों भगवान् मिलते हैं क्या!

रामानन्द – हम दोनों की इच्छा से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जायेंगे। आप संकल्प करो, भगवान् स्वयं हमें बल देंगे।

मीरा – (आँखें बन्द कर सोचने लगती है) चलो आप कहते हो तो प्रयास करेंगे... शायद हमारे पुण्य उदय हो जाएँ...

रामानन्द (खुशी में) – तुम महान् हो मीरा। भगवान् स्वयं हमें प्रेर रहा है।

मीरा – ठीक है, मैं पवित्र रहकर आपकी सहभागिनी बनूँगी।

रामानन्द – तो कल से हम दोनों ७ दिन का कोर्स आरम्भ करेंगे।

(इस प्रकार प्रो० रामानन्द जी अपनी पत्नी मीरा के साथ ईश्वरीय ज्ञान के कोर्स के लिए प्रतिदिन ब्रह्माकुमारी आश्रम जाने लगते हैं।)

तृतीय दृश्य

(ब्रह्माकुमारी आश्रम का क्लास रूम। चारों ओर ज्ञान-युक्त चित्र लगे हैं। एक कुर्सी पर गीता बहन श्वेत वस्त्र धारण किये बैठी हैं। सामने रामानन्द व मीरा हैं।)

ब्र०कु० गीता – आप दोनों का कोर्स पूरा हो गया, कैसा रहा आपका अनुभव?

रामानन्द – पहले तो बहन जी, मैं आपसे क्षमा-याचना करता हूँ। मेरा व्यर्थ का वाद-विवाद आपको बुरा लगा होगा। क्या करूँ जीवन भर जो शास्त्र पढ़े...

ब्र०कु० गीता – नहीं रामानन्द जी, हमें आपसे प्रश्न-उत्तर करने में बहुत आनन्द आया। हमें भला बुरा क्यों लगता, शंका समाधान तो आवश्यक है ही।

रामानन्द – बहुत ही बुद्धि-गम्य ज्ञान है। मैंने जीवन भर शास्त्र पढ़े परन्तु खोज, खोज ही रह गई। आप चेतन गीता के समक्ष मेरा गीता ज्ञान फीका पड़ गया। मेरी बुद्धि में गीता थी, आपके जीवन में गीता है। अब आपकी मार्ग-दर्शना से मैं भी इस जीवन को गीता बनाऊँगा। मुझे पूर्ण विश्वास हो चुका है कि यह सत्य ज्ञान स्वयं भगवान् द्वारा दिया जा रहा है।

ब्र०कु० गीता – बहुत अच्छा सीखा आपने। (मीरा बहन की ओर) आपको कैसा लगा?

मीरा – बहुत कुछ उल्टा-सुल्टा आपके बारे में सुना था। लोग आपके चरित्र के बारे में भी भ्रमित हैं। परन्तु आप तो सत्य की प्रतिमूर्त्ति हैं। आप पवित्रता की साक्षात् देवी हैं। ज्ञान में मुझे कोई संशय नहीं है। पवित्र जीवन तो हम पहले ही अपना चुके। हम अपने मित्र चटर्जी का भी दिल से शुक्रिया करते हैं जो हमारी बातों का बुरा न मानकर हमें अन्धकार से खींच कर प्रकाश में ले आये। हम तो अन्धकार को ही प्रकाश समझ बैठे थे।

ब्र०कु० गीता – आपका गृहस्थ अब कमल पुष्प समान हो गया। अब इसे निरन्तर ज्ञान-अमृत से सींचते रहना ताकि यह कुम्हलाने न पाये।

रामानन्द – बहन जी, हम तो अपने को ही बड़े ज्ञानी समझते थे परन्तु यहाँ आकर लगा वह ज्ञान तो ज्ञान-सागर के ज्ञान के समक्ष दीपक समान ही है। बहन जी, अब तो एक ही तीव्र इच्छा है कि जिसने यह ज्ञान दिया है, उसे प्रत्यक्ष देखूँ...

ब्र०कु० गीता – आप रोज अमृतवेले ४.०० बजे उठकर योग-अभ्यास द्वारा प्रतिदिन ईश्वरीय मिलन का अनुभव कर सकते हैं और जब शिव बाबा का आगमन मधुबन में होगा, हम आपको वहाँ ले चलेंगे।

रामानन्द – बहुत-बहुत शुक्रिया बहन जी...।

मीरा – अब हम एक भी दिन ज्ञान-अमृत पीन नहीं छोड़ेंगे।

रामानन्द – अच्छा दीदी, ओमशान्ति!

ब्र०कु० गीता – ओमशान्ति...

(सभी का प्रस्थान)

चौथा दृश्य

(ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का मुख्यालय। श्वेत-श्वेत इमारतें तथा श्वेत वस्त्र धारण किये माउण्ट आबू में ब्रह्माकुमार/

कर्मारियों। सभी के चेहरों पर अलौकिक मुस्कान, एक अजीब-सी शान्ति··· गीता बहन अपनी पार्टी सहित मधुबन में पहुँची, जिसमें रामानन्द व मीरा भी सम्मिलित हैं।)

रामानन्द (मीरा से) – हम धरती पर हैं या कहीं परियों के लोक में··· कुछ असाधारण-सा अनुभव हो रहा है। कल्पनाओं से परे, धरती पर ऐसा पीस-हाउस··· धन्य हैं वे जो यहाँ के वासी हैं।

मीरा – यदि कहीं स्वर्ग है तो यहीं है··· परम शान्ति है इतना ही नहीं, मन आनन्दित हो रहा है, पता नहीं क्यों··· वह आनन्द जो साधकों की अभिलाषा रहती है, यहाँ स्वतः ही प्राप्त हो रहा है।

रामानन्द – कोई बुद्धिमान व्यक्ति यहाँ आकर इस परम सत्य से इन्कार नहीं कर सकता कि यह परमात्मा की कर्मभूमि व अवतरण-भूमि है।

मीरा – सुना है आज यहाँ १५०० लोग पहुँचे हैं। क्या सुन्दर व्यवस्था है··· सब कुछ सुव्यवस्थित व अनुशासित··· कोई आवाज नहीं। हमारे घर में तो दो मेहमान आ जायें, बस···

रामानन्द – यहाँ आकर लग रहा है, हम पहले क्यों नहीं आये। सत्य यहाँ है और हम ढूँढ़ते थे अन्धकार में। यहाँ आकर मेरा तो विवेक निखर गया है, मन आलोकित हो उठा है।

मीरा – मनुष्य का अहंकार ही उसे इस प्रकाश से दूर कर रहा है। भौतिक ज्ञान के अहंकार ने मनुष्य का मन अन्धकार से भर दिया है। यहाँ देखो, सभी ज्ञानी, सभी योगी और चेहरों पर नम्रता व दिव्यता···

(ब्र०कु० गीता बहन का प्रवेश)

ब्र०कु० गीता – चलो आप सभी, बाबा का आह्वान होगा। सभी आगे-आगे योग में बैठो और एकाग्रचित्त होकर बाबा (परमपिता परमात्मा) से दृष्टि लेना।

(सभी क्लास में बैठे हैं, सन्देशी बहन सामने है जो ध्यान स्थित होंगी व उनके तन में परमात्मा का अवतरण होगा। गीत बज रहा है–"शिव स्वागत आज तुम्हारा···।"

१५ मिनट के बाद शिव बाबा परमधाम से उस माध्यम में प्रवेश करते हैं··· वे सभी को दृष्टि दे रहे हैं।)

रामानन्द ने देखा–चारों ओर शान्ति की लहरें फैल रही हैं।

रामानन्द (मन ही मन) – ओह, परम सौभाग्य हैं मेरे··· तुम्हें कन्दराओं में ढूँढ़ा, पर्वतों पर खोजा और आप यहाँ··· काश समस्त विश्व तुम्हारा ये स्वरूप देखे··· आज मेरे जन्म-जन्म के पुण्य उदय हो गये···, मेरी भक्ति पूर्ण हुई···!

मीरा (मन ही मन) – हे प्राणेश्वर बाबा, कभी सोचा भी नहीं था इस मिलन का··· धन्य-धन्य हो गई मैं··· मेरे जैसा भाग्य किसका होगा··· जो भगवान् मेरे सम्मुख प्रत्यक्ष हैं!

रामानन्द – दिल करता है, उड़कर चला जाऊँ समस्त विश्व में··· और सबको यह 'सत्य' बताऊँ··· मन नाच रहा है, रोम-रोम, पुलकित हो उठा है।

मीरा – यह अनुभव सबको प्राप्त हो··· सबको दिव्य नेत्र मिले··· बाबा मैं तो तृप्त हो गई। तुम मिले बस जहान मिल गया···।

(इसके बाद बाबा ने महावाक्य उच्चारे··· लगातार दो घण्टे तक वाणी चली, धारा प्रवाह··· गूढ़ दर्शन··· जीवन को महान् बनाने की प्रेरणाएँ···!)

रामानन्द (स्वयं से) – ये वाणी न कोई विद्वान सुना सकता, न योगी··· ज्ञान-सागर के अलावा किसी के पास यह ज्ञान नहीं। शास्त्रों में तो ऐसा ज्ञान कहीं भी नहीं। मैंने जीवन भर विद्वानों के अनेक व्याख्यान सुने परन्तु ऐसी हृदय को पावन करने वाली वाणी नहीं···

मीरा – पवित्रता का सागर सामने है जिनकी पवित्र वाणी सुनकर लगता है–आजीवन गृहस्थ में पवित्रता खेल है। सचमुच, यह ईश्वरीय शक्ति है···।

दोनों के चेहरे खिल उठे··· सारी रात जागकर उन्होंने यह प्रभु का अव्यक्त मिलन देखा। एक ही आसन पर १४ घण्टे बैठकर अनेक आत्माओं से वार्तालाप करते उन्होंने मनुष्य तन में प्रविष्ट भगवान् को देखा। जब वह पार्ट समाप्त होने को था, शिव बाबा वतन जाने के लिए सभी से विदाई ले रहे थे, उन्होंने समीप से देखा–चेहरे पर वही रूहाब, वही चेतनता, कोई थकान नहीं!

उनका निश्चय दृढ़ हो गया। उन्होंने अनुभव कर लिया कि वे किसी महान् पुरुष से नहीं मिले, वे किसी देवता से भी नहीं मिले। यह मिलन था आत्मा और परमात्मा का! अब कुछ भी जानना शेष नहीं रहा, कुछ भी पाना बाकि न रहा··· दोनों अपने भाग्य का स्मरण कर आनन्दित हो रहे थे और उनका मन गा रहा था–

पाना था सो पा लिया, अब काम क्या बाकि रहा

अव्यक्त बापदादा बोलेः–

पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंखों की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है।

राजयोग द्वारा आरोग्य

(मेडिकल विंग ऑफ राजयोग फाउन्डेशन द्वारा प्रेषित)

सुख एवं दुःख जीवन के अविरत पहलू हैं। सुख के लिए अनेकानेक साधन उपलब्ध हैं, फिर भी कहा जाता है—"प्रहला सुख नीरोगी काया।" संस्कृत में कहा गया है—"स्वास्थ्यमेव सर्व सुखमूलम्" अर्थात् सुस्वास्थ्य ही सर्व सुखों का मूल है। परन्तु हम सभी जानते हैं कि इस विश्व में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो कह सके कि मैं कभी भी बीमार नहीं हुआ। बीमारियों को रोकने के लिए बीमारियों के मुख्य कारण एवं उनके निवारण करने की यथार्थ विधि को जानना होगा।

रोगों का मूल कारण

आज जैट-युग के मानव को अनेक प्रकार से चिंता, निराशा, भय, असफलता, असुरक्षा, सामाजिक संघर्ष आदि के रूप में मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। आज मानव के लिए जीवन और चिंता एक-दूसरे के पर्याय बन गये हैं। किसी से भी पूछो कि चिंता करते हो? तो यही उत्तर मिलेगा कि "जीवन माना ही चिंता। चिंता के बिना क्या जीवन संभव है?" वर्तमान सुधरे हुए मानव की ऐसी मानसिक स्थिति होने के कारण ही दिन प्रतिदिन मानसिक एवं मनोकायिक (Psychosomatic) बीमारियों में अत्यन्त वृद्धि हुई है।

६०% से अधिक लोग अनिंद्रा से पीड़ित होते हैं। करोड़ों लोग हीनता की भावना (Inferiority Complex), हताशा (Depression) आदि से ग्रसित हैं। मानसिक तनाव से उत्पन्न होने वाले रोगों जैसे की आम्लपित्त (Acidity), पेट का अल्सर (Paptic Ulcer), कम या ज्यादा रक्तचाप (High or Low Blood Pressure), दिल का दौरा (Heart attack), संधिवात (Artheritis), एलर्जी आदि की संख्या में अवर्णनीय अभिवृद्धि हुई है। ९०% सिरदर्द (Headache) के केसों में तनाव (Stress) को कारणभूत पाया गया है। अमेरिका में हर वर्ष करीब आठ लाख लोगों की हृदय के रोगों से मृत्यु होती है।

डॉ० जोन फ्रेंच कहते हैं—"जब आप खून में कोलेस्ट्रल की मात्रा कम करते हो, ब्लड प्रेशर को बढ़ने नहीं देते, बजन कम करते हो, धूम्रपान छोड़ देते हो तब हृदय के रोगों का सिर्फ एक चौथाई हिस्सा कम होता है क्योंकि इसके अलावा तीन चौथाई हिस्सा मानव के मन के साथ संबंधित है।" मानसिक तनाव, क्रोध, लोभ, मोह, हताशा आदि हमारे गुप्त दुश्मन हैं जो कि हृदय रोग के लिए सबसे अधिक कारण भूत पाये गये हैं।

बहुत कम प्रतिशत रोग सिर्फ बाहरी कारणों से होते हैं। डॉ० स्मिथर, डॉ० हेन्स सेली, डॉ० रेबिनर आदि ने सिद्ध किया है कि कैन्सर, किडनी के रोग, कीटाणु जन्य रोग सिर्फ शारीरिक रोग नहीं हैं, उनके मूल मानव के मन में ही है। इसलिए अनेकानेक रोगों से बचने के लिए तथा अगर ऐसे रोग हुए हों तो उनसे छुटकारा पाने के लिए मन को शांत, शीतल एवं संतुलित बनाना होगा। बीमारी के बीच भी आत्मिक खुमारी कैसे रख सकते हैं, रोग में योगयुक्त कैसे रह सकें—यह समझ लेने से बीमारी के दुःखदायी क्षणों को ध्यानमय तथा आनन्दमय बना सकते हैं।

बीमारी में राजयोग

राजयोग शब्द सुनकर आपको शायद लगे कि इसमें गहन आसन होंगे, प्राणायाम की क्रिया-प्रक्रियायें होंगी। परन्तु नहीं। योग शब्द 'युज' धातु से बना है, जिसका अर्थ है मिलन—दो वस्तुओं का जोड़। मन-बुद्धि द्वारा स्वयं का परमात्मा से मिलन अर्थात् योग। कर्मेन्द्रियों (आंख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा) के राजा बनने की विधि को राजयोग कहा जाता है। आपका शरीर कितना न अशक्त हो, फिर भी आप मन-बुद्धि से परमात्मा को याद कर सकते हैं। शान्ति के सागर, आनन्द के सागर, दुःखहर्ता, सुखकर्ता परमात्मा के साथ मन को जोड़ने से आत्मा को शान्ति, आनंद एवं शक्ति की अनुभूति होती है, रोग प्रतिकारक शक्ति की वृद्धि होती है। यही कारण है कि राजयोग के अभ्यास द्वारा आप अन्य रोगियों की तुलना में बहुत जल्दी रोगमुक्त हो सकते हैं। अमेरीका में "कैन्सर रीसर्च हॉस्पिटल" के कैन्सर विशेषज्ञ, कर्नल डॉ० हंसा बहन रावल का निम्नलिखित अनुभव राजयोग द्वारा दर्द से मुक्त होने की असीम शक्ति की प्राप्ति को प्रमाणित करता है।

डॉ० हंसा बहन का अनुभव

मैं पिछले पाँच साल से राजयोग का अभ्यास कर रही हूँ। हड्डी बढ़ने के कारण बायें जबड़े का ऑपरेशन कराने की जरूरत महसूस हुई। तीन घण्टे का ऑपरेशन था। मैंने सर्जन से कहा—मुझे शीशी सुंघाए (Anesthesia) बिना ही ऑपरेशन करवाना है। स्वाभाविक है कि डॉक्टर ने ना कहा

और पगली समझने लगा। उन्हें मुझ पर विश्वास नहीं बैठा, पर मैंने दृढ़ता से कहा कि मुझे ऐसे ही ऑपरेशन करवाना है, मुझे ऑपरेशन से पूर्व राजयोग के अभ्यास के लिए आधा घण्टा दीजिए। मेरी ऊँची स्थिति एवं दृढ़ता से प्रभावित होकर उन्होंने मेरा कहा माना और सब के आश्चर्य के बीच मैंने बिना शीशी सूंघे ऑपरेशन करवाया। सिर्फ इतना ही नहीं, पर जिस ऑपरेशन के बाद मरीज को १५ दिन तक अस्पताल में रखा जाता है, उसके बदले मुझे चार दिन में ही घर जाने की छुट्टी मिल गई। मैंने एक बड़ी कॉन्फ्रेन्स की जिम्मेदारी भी ली थी जो मैंने सहज रीति से पूर्ण की। सचमुच राजयोग से मैंने अपने जीवन में एक अद्‌भुत शक्ति की अनुभूति पाई है।''

न्यूयार्क, मेलबोर्न, फ्रान्सिसको आदि स्थानों पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के नियमित अभ्यासी भाई बहिनों पर हुए प्रयोगों से भी सिद्ध है कि राजयोग द्वारा उन्हें मानसिक स्थिरता एवं गहन शांति की प्राप्ति हुई है। मस्तिष्क की तरंगों को ग्रॉफ के रूप में अंकित किया जाता है। इसे इलेक्ट्रो एनकेफेलो ग्राम (EEG) कहा जाता है। इ०इ०जी० के ग्राफ की रूपरेखा व्यक्ति की मन:स्थिति को भी दर्शाती है। प्राय: निद्रा एवं गाढ़ निद्रा के दौरान पाये जाने वाली थिटा और डेल्टा तरंगें (Theta and Delta Waves) राजयोगी भाई-बहनों की जाग्रत अवस्था में भी इ०इ०जी० ग्राफ में अंकित थीं। मानसिक कार्य करते समय, प्रश्नों के उत्तर देते समय भी इसी प्रकार के गहन शांति की स्थिति वाली डेल्टा तरंगें अंकित थी।

न्यूयार्क में ब्रह्माकुमारी राजयोगिनी दादी जानकी जी (सहसंचालिका, ब्रह्माकुमारी ई०वि० विद्यालय) को विश्व में सबसे महान् स्थिर-मन:स्थिति पूर्ण व्यक्ति (Most Stabled-mind Woman) घोषित किया गया।

शरीर बीमार, पर आत्मा स्वस्थ

रोग या बीमारी शरीर को होती है। आत्मा तो शरीर और रोग दोनों से भिन्न न्यारी है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है जबकि शरीर पांच तत्वों से बना प्राकृतिक नियमों के वश है। जैसे शारीरिक खुराक—अन्न, हवा और पानी है, वैसे ही आत्मिक खुराक सद्‌विचार हैं। दूषित विचार एवं चिंताएँ कातिल जहर का कार्य करते हैं। आत्मा के स्वाभाविक गुण सुख, शांति, प्रेम एवं आनन्द हैं। आत्मिक चिंतन करने पर गहरी शांति एवं आनंद का अनुभव होता है।

अद्‌भुत सौगात (तोहफ़ा)

बीमारी के समय अधिकतर व्यक्तियों की विचारधारा चलती है—''मुझे ही यह रोग क्यों हुआ? भगवान् ने मुझे ही क्यों दु:ख देने के लिए चुना? अब यह रोग ठीक होगा या नहीं, मिटेगा कि नहीं? ये दु:ख के दिन कैसे बीतेंगे?'' ऐसे व्यर्थ चिंतन के बदले ऐसे सोचो कि यह समय विशेष परमात्मा की ओर से मिला हुआ तोहफा (भेंट) है। स्वचिंतन एवं परमात्म-चिंतन करने का सुन्दर मौका है। समय का सदुपयोग करो और भगवान् का शुक्रिया मानो। ऐसे समय में आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़कर शुद्ध चिंतन करने से बीमारी का समय ध्यान के समय में परिवर्तन हो जायेगा।

दवा और दुआ

शरीर के रोगोपचार के लिए दवाई जरूरी है परन्तु साथ में दुआ अर्थात् शुभभावना भी बहुत मदद करती है। परमात्मा की याद से उनकी दुआ प्राप्त होगी। समस्त मानव-समुदाय के लिए कल्याण की भावना रखने से सर्व की दुवा मिलती है।

कर्मभोग और कर्मयोग

शारीरिक रोग और उस द्वारा प्राप्त दु:ख की अनुभूति भी कर्म भोगना है। किये हुए कर्म, संचित कर्म का फल हैं। अच्छे कर्म का फल सुख और बुरे कर्म का फल दु:ख है। कर्म की भोगना द्वारा पाप कर्मों का खाता चुकता होता है अथवा कम होता है। जैसे कर्जदार को पैसा भरते खुशी होती है कि कर्ज कम होता जाता है, भार हल्का होता जाता है। वैसे ही दु:ख की भोगना द्वारा पाप कर्मों का भार आत्मा पर से कम होता है।

राजयोग के अभ्यास द्वारा कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन कर सकते हैं। राजयोग माना परमात्मा की यथार्थ याद द्वारा तत्कालिक दर्द भूल जाते हैं। योग-रूपी अग्नि में पाप भस्म होते हैं और भविष्य में आने वाले दु:ख और रोग से भी मुक्ति प्राप्त होती है।

रोग में राहत पाने के लिए चिंतन-बिन्दु

राजयोग के लिए स्वचिन्तन और परमात्म-चिन्तन कैसे करें, उसकी पद्धति विचारों के रूप में यहाँ बताई गई है। हरेक विचार-बिन्दु पर गहराई से विचार कर उस स्थिति में स्थित होने का सहज रीति से प्रयत्न करें।

आत्म-चिंतन

मैं यह स्थूल शरीर नहीं... शरीर में रहने वाली चैतन्य-शक्ति आत्मा हूँ... यह शरीर पाँच तत्त्वों से बना हुआ है और नाशवान है... मैं आत्मा अजर, अमर, अविनाशी हूँ... मैं आत्मा इस शरीर को चलाने वाला शरीर

रूपी मोटर का ड्राईवर हूँ... आँखों से देखने वाली... कानों द्वारा सुनने वाली... मुख से बोलने वाली... पाँव से चलने वाली और हाथ से कर्म करने वाली मैं चेतन्य आत्मा हूँ... मन-बुद्धि संस्कार सहित मैं आत्मा शांतस्वरूप... प्रेमस्वरूप... आनन्दस्वरूप एवं शक्तिस्वरूप हूँ...

परमात्म-चिन्तन

मैं ज्योति-स्वरूप चैतन्य बिन्दु आत्मा हूँ... मेरे अविनाशी पिता भी ज्योति-बिन्दु-स्वरूप परम आत्मा हैं। जन्म-मरण से परे अजन्मा, अभोक्ता हैं... सर्व धर्म की आत्माओं के पिता, दुःखहर्त्ता, सुखकर्त्ता हैं... समग्र विश्व के कल्याणकारी हैं... आप ज्ञानसागर... शांति के सागर... आनन्द के सागर हैं... पांच तत्वों से पार छठे ब्रह्मतत्व में निवास करते हैं... मात-पिता, बंधु-सखा आदि मेरे सर्व सम्बन्ध आप के साथ ही हैं...

विशाल विश्व-नाटक और मैं

इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर विशाल नाटक अनादि और अनंत रूप से खेला जा रहा है... मैं इस नाटक का पात्र हूँ... नाटक के निर्देशक और संचालक सर्व आत्माओं के पिता परमात्मा 'शिव' हैं... हरेक आत्मा का अपना-अपना विशेष पार्ट है... अभी इस नाटक के अन्तिम चरण पर मैं साक्षी-द्रष्टा बन कर यह नाटक खेल रहा हूँ... अब वापस स्वधाम (परमधाम) जाने का समय हुआ है... इसीलिए परमात्मा की श्रीमत पर चल कर पवित्र और योगी बनने का पुरुषार्थ करती हूँ... सत्य ज्ञान को समझकर मैं आत्मा गहरी शांति एवं हल्केपन का अनुभव कर रही हूँ... ॐ शांति... शांति... शांति...

बड़ौदा—'सुखमय संसार बनाने में उद्योगों का सहयोग' कार्यक्रम में भाषण करते हुए सरदार एस्टेट के प्रमुख भ्राता लीलाराम पोखवानी जी।

चिन्तन

श्री मन एवं श्री मति

हम सभी लोग जब किन्हीं भी सज्जन, मित्र-संबन्धी, स्वजनों, व्यापारियों अथवा अधिकारियों से पत्राचार करते हैं, तो ऊपर पते (Address) में 'श्रीमान्' एवं 'श्रीमती' शब्दों का प्रयोग करते हैं। ये शब्द उपरोक्त शब्दों के बदले हुये रूप हैं। सही शब्द हैं 'श्री मन्' एवं 'श्री मति'। अब इनका विश्लेषण करके देखें कि इनका सही अर्थ क्या है और हम इनका जीवन में कैसे सदुपयोग करें?

'श्री' का अर्थ है सर्वश्रेष्ठ, सर्वगुण सम्पन्न, वैभवशाली, समृद्धिशाली, ऊंच ते ऊंच नाम वाला, ज्ञान में सर्व महान्, आनन्द व प्रेम का सागर अर्थात् परमपिता परमात्मा शिव यानी अल्लाह-ईश्वर, जिसकी 'श्री' का कभी अन्त न हो।

'मन्' अर्थात् आत्मा की वह शक्ति जिसके द्वारा प्रत्येक मानव करता है चिन्तन का कार्य, संकल्पों, विकल्पों, ध्यान, धारणा, विचार आदि का कार्य। तो श्री मन कहेंगे उनको जिनका 'मन' निरन्तर प्रभु चिन्तन में, बाबा के चिन्तन में, उन द्वारा ब्रह्मा के माध्यम से दिये ईश्वरीय ज्ञान के चिन्तन में हर क्षण, हर पल लगा रहे।

'मति' अर्थात् बुद्धि अर्थात् आत्मा की वह शक्ति जिसके द्वारा मानव निर्णय लेने का कार्य करता है। तो 'श्री मति' कहेंगे उनको जिन्होंने जीवन में यह निर्णय कर लिया कि वे अपनी बुद्धि को लगाये रहेंगे परम प्यारे, परम पिता, सुखदाता बाप, शिव बाबा की ओर।

तो ऐसे ही लोगों को जिन्होंने निरन्तर अभ्यास किया अपने मन व बुद्धि को लगाये रहने का परमात्मा की याद में, प्रभु चिन्तन में, उन्हें ही संगमयुग में खिताब (टाइटिल) दे दिया गया "श्रीमन् एवं श्रीमति" का।

तो आओ, प्यारे भाइयो एवं बहनो, हम अपनी-अपनी जाँच करें कि हम स्वयं कितने श्रीमन् व श्रीमति बने हैं व साथ ही यह भी देखें कि जिन्हें भी हम पत्रों में यह 'टाइटिल' दे रहे हैं, उन्हें वास्तविक रूप से श्री मन् व श्री मति बनाने की सेवा कर रहे हैं तो कितनी? श्री-श्री शिवबाबा भी कहते हैं, "बच्चो, तुम्हें तो बनना ही है 'श्री मन्' व 'श्री मति' और सबको बनाना है श्रीमति एवं श्री मन्। ऐसा अभ्यास करने से तुम भविष्य में बन जाओगे मेरी समस्त प्रापर्टी के मालिक सो डबल ताजधारी देवता—श्री लक्ष्मी एवं श्रीनारायण और कहलाओगे 'विश्व पति'।

ब्र० कु० ओमप्रकाश, बाँदा

अल्लाह की जादुई मुरली

ब्र०कु० भगवती प्रसाद, लखनऊ

बात सन् १९३७ की है, जब परमपिता परमात्मा निराकार शिव ने ब्रह्मा मुख का आधार लेकर ज्ञान-मुरली उच्चारित करनी शुरू की। जिन आत्माओं के कानों में यह ज्ञान-मुरली पड़ी उनके ज्ञान-चक्षु खुल गये। इन आत्माओं में बच्चे, बूढ़े, जवान, माताएं, कन्याएं आदि सभी थे। केवल इन्हीं आत्माओं को प्रजापिता ब्रह्मा के तन में परमपिता परमात्मा की प्रवेशता का अनुभव के आधार पर ज्ञान था। इन्हें ही गोप-गोपियां कहा जाता है। गोप-गोपियां यानी गुप्त वेश में रहने वाले, जिनके द्वारा गुप्त परमात्मा की प्रत्यक्षता कल्प-कल्प के संगमयुग पर होती चली आयी है। यह गोप-गोपियां श्याम सुन्दर अर्थात् श्याम शरीर में (साधारण, विकारी शरीर में) आये हुए सत्-चित्-आनन्द स्वरूप सुन्दर परमात्मा की ज्ञान-मुरली सुनने के लिए बेचैन रहते थे। इसी ज्ञान-मुरली का भक्ति-मार्ग में कृष्ण की मुरली के रूप में गायन करते हैं। इन्हीं गोपियों ने लोकलाज छोड़कर साकार ब्रह्मा के साथ रहना स्वीकार किया। तपस्या के १४ वर्ष व्यतीत करने के बाद यही गोप-गोपियां, ब्रहमाकुमार/कुमारी नाम से सारे विश्व में सत्य पिता द्वारा दिये जा रहे सत्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने निकल पड़े। आज भारत ही नहीं अपितु सारे विश्व में यही प्रभु-पुत्र व प्रभु-पुत्रियाँ ईश्वरीय ज्ञान व सहज राजयोग द्वारा मनुष्य आत्माओं को तमोप्रधानता से सतोप्रधानता की स्थिति की ओर लिये जा रही हैं।

अनुभव कहता है कि इस ज्ञान-मुरली में ऐसा ईश्वरीय जादू है कि इसे सुनते-२ मनुष्य के अन्दर व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ..... आदि विकार समूल नष्ट हो जाते हैं। काम विकार से बचने के लिए सन्यासी माताओं को विधवा व बच्चों को यतीम बनाकर स्वयं जंगल में चले गये। परन्तु आश्चर्य है कि सारे विश्व में लाखों लोगों ने घर गृहस्थ में रहते हुए काम महाशत्रु को इस ज्ञान-मुरली के आधार पर जीता है। स्त्री-पुरुष साथ रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करें—यह ईश्वरीय जादू का ही कमाल है।

ज्ञान-मुरली सुनते आत्मा का परमात्मा से सहज ही सम्बन्ध जुट जाता है और इस प्रकार अनुभव के आधार पर आत्मा बुद्धि द्वारा परमात्मा से घनिष्ठता स्थापित कर लेती है। इसे ही सहज राजयोग कहा जाता है। जितना अधिक ज्ञान-मुरली पर अटेंशन रहता है उतनी ही ईश्वर से घनिष्ठता बढ़ती जाती है जिससे आत्मा में दैवी गुणों की धारणा होती जाती है। फलस्वरूप आसुरी प्रवृत्तियाँ दूर होती जाती हैं। जैसे गंदे पानी से भरे किसी बर्तन में साफ जल की धारा निरन्तर डालते जायें तो एक समय आयेगा कि बर्तन का सारा जल साफ हो जाएगा।

जितना-२ हमें ईश्वर से प्यार होता है हमारे अन्दर परमात्मा के गुण—प्रेम, सुख, शान्ति, आनन्द .... आदि स्वतः ही आते जाते हैं। मुरली में ऐसा जादू है कि आत्मा को ईश्वरीय प्यार की अनुभूति होती है क्योंकि ज्ञान-मुरली ही तो ईश्वरीय महावाक्य हैं। ज्ञान-मुरली द्वारा ही तो वह हम आत्माओं को ज्ञान देगा। ब्रह्मा-मुख से ही तो वह हमें पुचकारेगा—"तुम ही कल्प के बिछुड़े हुए मेरे बच्चे हो। तुम्हें ही पतित से पावन बनाने आया हूँ।"

मुरली में वह शक्ति है जिससे आत्मा में सर्वशक्तियाँ भरती जाती हैं। मुरली पहले हमें शरीर-भान (Body Conscious) से हटाकर आत्मा-भान (Soul Conscious) में लाती है। जितना-२ आत्माभिमानी बनते जाते, परमात्मा की शक्ति आत्मा में तिरोहित होती जाती है। साइंस द्वारा तो केवल वायुमण्डल में उपस्थित मनुष्यों की आवाजों को कैच करने का प्रयास करते हैं जबकि ज्ञान-मुरली तो हमें साइलेंस द्वारा अपने ही आदि-अनादि संस्कारों में पुनः स्थित कर देने की शक्ति रखती है।

परमात्मा के शब्दों में कितना जादू है! जैसे ही कानों में आवाज पड़ती है—"मीठे बच्चे ....।," दिल खुशी के सागर में हिलोरें लेने लगता। दिल मानता कि मेरा अविनाशी पिता मुझे कितना प्यार कर रहा है! इतना प्यार तो कल्प में केवल एक बार ही संगमयुग में मिलता है। जब कानों में यह आवाज आती है—"मीठे बच्चे, तुमने कल्प-कल्प माया को जीता है। माया शेरनी पर तुमने जीत पहनी है जिसका यादगार है दुर्गा की शेर पर सवारी। तुम ही देवता थे। ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता बनने वाले हो।" तो अन्दर में महसूसता आती कि हम कितने भाग्यशाली हैं जो अपने प्यारे अविनाशी बाप का सच्चा-२ परिचय ही नहीं, प्रैक्टिकल में उनकी पालना पा रहे हैं। दिल से बाबा (परमात्मा) के लिए थैंक्स निकलती।

सारे विश्व में ब्रह्मा-वत्स प्रातःकाल की ज्ञान-मुरली सुनने के लिए कितनी तड़पन व लग्न से सेवाकेन्द्रों पर पहुँचते हैं। कितनी ही बाँधेली बच्चियाँ (जिनका परिवार के लोग

ईश्वरीय ज्ञानार्जन में विरोध करते हैं) अपने प्रियतम (परमात्मा) की याद में सिसकती व आहें भरती प्रैक्टिकल में दिखायी पड़ती हैं। भक्त लोग जिनके मात्र दर्शन के लिए सारा जीवन गायन, पूजन में लगाकर नाना प्रकार के कष्ट सहते हैं, जिसकी प्राप्ति में ऋषि, महात्माओं ने नाना प्रकार की उपासना, हठयोग आदि साधे। वही भगवान् अपने बच्चों को इस प्रकार पुचकारते हैं—"तुम तो मेरे बिछुड़े हुए बच्चे हो, तुम्हें पाकर मैं कितना खुश हूँ! तुम बाप को याद करते हो तो क्या बाप तुम्हें याद नहीं करता! बाप भी तुम बच्चों को याद करता है। बच्चे भले ही बाप को भूल जायें पर बाप बच्चों को क्या भूल सकता है?" कितना स्वमान देने वाला है बाबा, यह हम ब्रह्मा-वत्स ही जानते हैं!

विकट परिस्थितियों में भी अन्दर से फीलिंग आती कि बाबा कहे—"नथिंग न्यू। कल्प-२ तुम बच्चों ने ही माया पर जीत पायी है।" जिससे परिस्थिति भी स्वस्थिति बनाने में मदद करती।

भिन्न-२ परिस्थितियों, भिन्न-२ समाज में हमारा व्यवहार कैसा हो, हमारी फीलिंग कैसी हो?—यह सिखाती है मुरली। प्रैक्टिकल में लगता कोई अन्दर से समझ पैदा कर रहा है कि बच्चे ऐसा करो। आत्मशक्ति की कमी महसूस होने पर लगता कोई शक्ति भर गया। यह सब कमाल है मुरली की!।

अनुभव कहता ज्ञान-सागर की ज्ञान-मुरली का विचार सागर मन्थन करते-२ दिल इतनी गहराई में समा जाता है जहाँ न कोई संकल्प रहता, न विकल्प। अनुभव होता कि हम शांति सागर में समा गये हैं।

मुरली ने तो हम ब्राह्मणों को अनोखी दुनिया में ला खड़ा किया है जहाँ हम बाबा के साथ कम्बाइन्ड होकर कर्म करते हैं। खाते तो बाबा के साथ, सोते तो बाबा की गोदी में, बातें करते तो साइलेंस में आकर बाबा के साथ। बाबा ने अपने आप से बातें कराना सिखाया। खुद के शिक्षक भी बन गये तो चेकर भी। क्या कमाल किया है बाबा की मुरली ने! बुद्धि मानती कि क्या रखा है इस पुरानी जड़जड़ीभूत दुनिया में जहाँ झूठी मान-शान के लिए सारे लोग अन्धों की भान्ति बेसमझ बनकर दौड़े चले जा रहे हैं। परन्तु कहाँ जा रहे हैं, यह भी मालूम नहीं। ब्रह्मा वत्सों के जीवन में अलौकिक परिवर्तन को दुनिया वाले परख तक नहीं पा रहे हैं क्योंकि परखने की शक्ति का अभाव जो है न। बड़े भाग्यवान वह हैं जिन्हें मुरलीधर व मुरली को समझने की दिव्य बुद्धि स्वयं मुरलीधर (भगवान) ने दी है।

मेरा अनुभव कहता है कि मेरा पहले का जीवन क्या था? खान-पान, सोच-विचार, क्रिया-कर्म सब कितने घिनौने थे। मानव जीवन का न उद्देश्य पता था, न ही जीवन का कोई लक्ष्य था। मैं समझता कि मेरा अपना जीवन बेसमझ जानवर की भान्ति था। जब कभी पूर्व जीवन के बारे में विचार करता हूँ तो अपने ही पूर्व जीवन पर हँसी आती है। आज यह मुरली का ही कमाल है जिसने जीने की कला सिखायी है। कर्म-विकर्म-अकर्म का गुह्य रहस्य समझा कर कर्मयोगी बना दिया। दिशा रहित जीवन को लक्ष्य व दिशा मिली।

बाबा ने कहा "मीठे बच्चे" और दिल ने कहा 'मेरा बाबा'। बस, इन्हीं दो शब्दों ने ऐसा जादू किया कि बात मत पूछो। आत्मा ऐसा अनुभव कर रही है जिसका वर्णन शब्दों में हो ही नहीं सकता। इसके लिए सरस्वती के पास केवल एक शब्द है—अतीइन्द्रिय सुख।

कहाँ तक ज्ञान-मुरली की महत्ता वर्णन करें! सोते-जागते हर संकल्प में बस ईश्वरीय ज्ञान-मुरली के महावाक्य गूँजते रहते हैं। यही तो मुरली का जादू है जिसे कहा जाता है "जादुई अल्लाह की मुरली"। देखिये न, कमाल मुरली का सुनाने वाला चाहे जो हो, दिल को भासना आती हैं कि बाबा मुरली सुना रहा है। दिल और दिमाग में भगवान् की महसूसता होती है। मुरली ने तो हम ब्राह्मणों को भगवान् का दीवाना बना डाला। खाते-पीते, उठते-बैठते, सोते जागते, कार्य व्यवहार करते केवल भगवान् की ही तो भासना आती है! दिल और दिमाग को फर्श से उठाकर अर्श पर बिठा दिया। यह कमाल तो मुरली का ही है!

वाह नया जीवन देने वाली मुरलीधर की मुरली जो दिल-दिमाग पर छा गयी! यह न मिले तो शायद जीवित रहना ही असम्भव हो जाये! कैसी अनोखी सहेली है मुरली जो जीवन के अन्त तक साथ निभायेगी! मुरली ही तो साथी बन कर जाग्रत अवस्था में तो क्या, स्वप्न में भी गाइड कर रही है।

जामनगर सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित 'स्वास्थ्य शिविर' में रोगियों का निरीक्षण करते हुए डा० प्रह्लाद दवे।

सन्तुलित जीवन

ब्र० कु० गोलक, आबू पर्वत

भौतिक विकास के साथ मनुष्य के अन्तर मन में आध्यात्मिक चेतना भी जाग्रत हुई है जिस कारण मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ एवं सम्पूर्ण विकसित माना जाता है। यह भौतिक एवं आध्यात्मिक चेतना का सम्पूर्ण विकास ही मनुष्य जीवन को सन्तुलित करता है। इनमें से एक की कमी जीवन को असन्तुलित बना देती है जिससे मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार की समस्यायें एवं दुःख अशान्ति के कारण उत्पन्न होते हैं।

यह सर्वमान्य है कि मनुष्य के भौतिक विकास के लिए उसे पौष्टिक आहार, स्वच्छ वायुमण्डल तथा अन्य उपयोगी भौतिक साधनों की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए मनुष्य के शरीर को ही लिया जाए—शरीर विशेषज्ञों एवं डॉक्टर्स का यह कहना है कि शरीर का सम्पूर्ण स्वास्थ्य भी मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक विकास दोनों के ऊपर निर्भर करता है। अगर हम केवल शरीर को आधारभूमि के रूप में लें तो भी सन्तुलित पौष्टिक भोजन ही एक स्वस्थ, सुन्दर एवं शान्ति सम्पन्न शरीर बनाने में मदद करता है। यह तो हुआ एक पहलू। परन्तु उसका दूसरा पहलू है—मानसिक विकास। जिस प्रकार शरीर के विकास के लिए शरीर एवं शरीर की उपयोगी वस्तुओं सम्बन्धी ज्ञान का होना आवश्यक है।, वैसे मानसिक विकास के लिए मन एवं मन से सम्बन्धित ज्ञान होना आवश्यक है। स्वस्थ सुन्दर शरीर होने पर भी, जब तक मनुष्य के जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान का समावेश नहीं होता, तब तक जीवन में सन्तुलन नहीं आ सकता है। फलस्वरूप मनुष्य अशान्ति, तनाव, निराशा आदि मनोविकारों से घिरा रहता है तथा अपने जीवन में बास्तविक आनंद को अनुभव नहीं कर पाता।

समय अनुरूप विज्ञान ने, मनुष्य के शरीर की भौतिक प्रगति के लिए, अनेकानेक भौतिक साधन, शिक्षा तथा परिवेश प्रमाणिक रूप में मनुष्य को दिए हैं। परन्तु विज्ञान ने आध्यात्मिक उन्नति के लिए कोई भी ठोस मार्ग-दर्शन नहीं किया है। पारम्परिक सामाजिक-धार्मिक मान्यतायें, भक्ति पूजापाठ, धर्म गुरू आदि से जो भी मत मनुष्य को अभी तक मिलतीं आ रही है वह सब परस्पर विरोधी एवं सैद्धान्तिक न होने कारण मनुष्य जीवन को सन्तुलित करने के बजाए उसके जीवन पथ पर भिन्न-२ प्रकार से नैतिक एवं सामाजिक समस्या बन गया है। इसी कारण आज मनुष्य का विश्वास इस आध्यात्मिकता से उठता जा रहा है। साथ-२ भौतिकता की प्रगति से आध्यात्मिकता की अनेक प्रचलित मान्यताएं झूठी सिद्ध हो गई हैं। इसलिए मनुष्य आज अपने जीवन की सर्व आवश्यकताओं को पाने के लिए विज्ञान के भौतिक साधनों पर निर्भर करने लगा है। भले उसे इन सबसे क्षणिक सुख-सुविधा मिलने पर भी भय एवं निराशा उसके जीवन को असन्तुलित बना देते हैं।

आध्यात्मिक प्रगति

आधुनिक भौतिक विज्ञान की प्रगति पराभौतिक विज्ञान की प्रगति में बहुत सहायक बनी है, जिससे अनेक प्रकार की आध्यात्मिक बातों की गुत्थी को सुलझा कर आध्यात्मिक विज्ञान की महानता को मनुष्य के आगे स्पष्ट कर दिखाया गया है। आध्यात्मिकता न केवल मनुष्य के जीवन को सन्तुलित करती परन्तु मनुष्य के सर्वांगीण विकास के साथ-२ एक सन्तुलित समाज के विकास में भी मुख्य सहायक बनती है। इससे मनुष्य का सम्पूर्ण मानसिक एवं शारीरिक सन्तुलन होने के साथ-२ उसके सम्बन्ध, व्यवहार, कर्म तथा धर्म में भी सन्तुलन आ जाता है। फलस्वरूप मनुष्य के सन्तुलित जीवन के प्रकम्पन्न(Vibration)से पांच मुख्य महाभूत (तत्त्व) भी सन्तुलित होकर मनुष्य के जीवन को सुख-शान्ति-आनंद प्रदान करने लगते हैं। ऐसे सन्तुलित समाज को आज भी विश्व के हर धर्म के मनुष्य स्वर्ग, हेविन (Heaven), बहिश्त, परिस्तान आदि नामों से याद करते हैं तथा अपने जीवन में पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयास भी करते हैं। मनुष्य के इस प्रकार के आध्यात्मिक विकास के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ई० विश्व विद्यालय पिछले ५२ वर्षों से अपनी सेवाएं सफलता पूर्वक समग्र विश्व को प्रदान करता आ रहा है। विश्व में यह एक पहला एवं एकमात्र अनोखा विश्व विद्यालय है जिसने भारत की प्राचीन संस्कृति के दर्शन अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा सैद्धान्तिक रूप में समग्र विश्व को स्पष्ट कर दिखाया है कि मनुष्य के जीवन को सम्पन्न एवं सम्पूर्ण बनाने के लिए आध्यात्मिक विज्ञान के प्राचीन मूलभूत आधारों से विकसित की गई शिक्षा पद्धति को अपने जीवन में अपनाकर अपने जीवन को सन्तुलित बनाने के साथ-२ विश्व की अन्य आत्माओं को सन्तुलित जीवन बनाने का मार्ग-दर्शन कर रहे हैं जो कि आध्यात्मिक प्रगति का एक महान सबूत है।

सहज राजयोग भौतिकता एवं आध्यात्मिकता के समन्वय का एक जीवन्त उदाहरण है। दूसरे शब्दों में भाषा में भौतिक एवं पराभौतिक का समिश्रण है, क्योंकि दोनों के समन्वय से ही जीवन चक्र प्रारम्भ होता है जिसमें आध्यात्मिकता मुख्य कर्त्ता के रूप में कार्य करती है। व्याकरण की दृष्टि में जैसे वाक्य में कर्ता, कर्म एवं क्रिया वाक्य को सन्तुलित बनाते हैं, ऐसे ही जीवन की प्रक्रिया में आध्यात्मिकता अर्थात् अलौकिक चेतन शक्ति आत्मा एवं भौतिक शक्ति अर्थात् पंच महाभूत से बना हुआ शरीर दोनों का समन्वय है। आध्यात्मिक चेतना अर्थात् आत्मा जिसके अन्दर अनुभूति, जिज्ञासा, निर्णय करने की शक्तियां निहित हैं, वह कर्त्ता के रूप में अपने विकास की भावनाओं को, कर्म को तथा अपनी चेतना की सर्व अभि-भावनाओं को भौतिक शरीर के द्वारा ही अभिव्यक्त करता है। स्थूल रूप में आत्मा को ड्राईवर एवं शरीर को मोटर रूप में प्रतिपादित कर सकते हैं। जिस प्रकार ड्राईवर की महानता उसके ड्राईविंग कुशलता एवं मोटर सम्भाल के ऊपर आधारित है, ऐसे ही आत्मा को आध्यात्मिक चेतना सम्पन्न होकर अपने शरीर द्वारा सर्व कर्म को सुचारू रूप से करने की विधि राजयोग सिखाता है अर्थात् आत्मा कर्त्ता के रूप में किस प्रकार अपने भौतिक शरीर को या साधनों को व्यवहार में लाये एवं उसकी देख रेख कैसे करे—यह सिखाता है।

सहज राजयोग एक सरल विधि है, जो बहुत कम मेहनत एवं समय में अपने जीवन को सन्तुलित बना देता है। क्योंकि इसके अभ्यास से मनुष्य आत्मा को अनेक प्रकार की आन्तरिक खुशी, आनंद की अनुभूति होती है। राजयोग के अभ्यास से न केवल मनोविकारों द्वारा उत्पन्न शारीरिक एवं मानसिक व्याधि दूर होती है बल्कि इसका निरन्तर अभ्यास शारीरिक स्वास्थ्य को भी सन्तुलित बनाने में मुख्य भूमिका निभाता है। राजयोगी का सन्तुलित सात्विक भोजन, ब्रह्मचर्य का पालन तथा अन्य सभी राजयोगी के नियम एवं संयम शरीर को निरोगी, शक्तिशाली एवं सुन्दर बनाने के साथ-२ आयुवर्धक बना देते हैं। वह ऐसे दैवी सम्पन्न जीवन को प्राप्त कर लेता है जिनका आज भी देवी देवताओं के रूप में मन्दिरों में पूजन होता है।

राजयोग की शिक्षा व्यक्तिगत परिवर्तन करने के साथ-२ समाज को भी परिवर्तन करती है। क्योंकि व्यक्ति को लेकर ही समाज बनता है, इसलिए स्व परिवर्तन से समाज का परिवर्तन तथा विश्व का परिवर्तन करने की विधि केवल राजयोग ही सिखाता है। राजयोग द्वारा न सिर्फ व्यक्ति अपने जीवन में सन्तुलन बनाये रखता है परन्तु उसके सन्तुलित व्यवहार, कर्म एवं सम्बन्ध से अन्य व्यक्ति भी सन्तुलित अनुभव करते हैं।

परिशेष मेरी शुभइच्छा है कि आप सभी पाठक इस राजयोग को अपने जीवन में अपनाकर वर्तमान एवं भविष्य जीवन को सन्तुलित कर, सम्पूर्ण स्वास्थ्य, अखुट आध्यात्मिक शक्ति, अपार आनंद, सर्व दिव्य गुण, सम्पूर्ण जीवन का सुखद अनुभव स्वयं प्राप्त करें तथा अन्य आत्माओं को भी प्राप्त कराने के निमित्त बन, आदिपिता ब्रह्मा द्वारा स्थापन होने वाली सन्तुलित नई दैवी दुनिया के कार्य में सहयोगी बनें।

सिकन्दराबाद में आयोजित 'सुखमय संसार' प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ब्र० कु० अशोक भाई।

कानपुर (नयागंज)—'शिक्षा में नई दिशा प्रदर्शनी' का उद्घाटन करने के पश्चात् अपने विचार लिखते हुए बहन विद्या चौहान, प्रधानाचार्या।

मानव की उन्नति का आधार–'आध्यात्मिक ज्ञान'

आज संसार में मनुष्यों की वृद्धि दिन प्रतिदिन हो रही है पर उसके विकास की गति धीरे-धीरे कम होती जा रही है। इसका मुख्य कारण यही है कि मनुष्य आध्यात्मिक ज्ञान के बिना मानवता से दूर रह कर अपने जीवन का महत्त्व खोता जा रहा है।

मानवता की शान–आध्यात्मिक ज्ञान

मान-सम्मान का हकदार आज वही व्यक्ति समझा जाता है जिसमें थोड़ा बहुत भी ज्ञान होता है। भले ही व्यक्ति साधारण हो, बूढ़ा हो, जवान हो परन्तु अगर उसमें किसी प्रकार का ज्ञान होता है तो लोग उसके पास दौड़े चले आते हैं। उस इन्सान की इज्जत व शान उसके ज्ञान के आधार पर ही बढ़ती है। थोड़ा विचार करें, जब किसी विषय-वस्तु का सामान्य ज्ञान होने पर मनुष्य की इतनी शान बढ़ जाती है, फिर भला उस परमपिता द्वारा दिये हुए गीता ज्ञान से आप कितने महान् बन सकते हैं। मात्र सम्मान ही नहीं, आप स्वयं की पहचान कर सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का राज़ समझ, श्रेष्ठ कर्म अपनाकर नर से श्री नारायण बन देव पद की प्राप्ति करते, ये क्या कम है?

वही है भाग्यवान–जिसको मिला आध्यात्मिक ज्ञान

अक्सर हमें यह देखने को मिलता है कि दुनिया में हर मनुष्य किसी न किसी क्षेत्र में ज्ञान हासिल कर अपने आप को महान् बनाने का प्रयत्न कर रहा है और कुछ हद तक सफल भी होते हैं। पर मनुष्य को मनुष्य द्वारा मिला हुआ ज्ञान कहाँ तक आगे ले जा सकता है–बस, यही कि कोई डॉक्टर, इंजीनियर बैरिस्टर, नेता या शिक्षक बन पाते हैं। किन्तु उस परमात्मा से मिला गीता ज्ञान मानव को सबसे महान् पद विश्व महाराजन की प्राप्ति कराता है। सचमुच वह व्यक्ति भाग्यवान् है जिसे परमात्मा के द्वारा ज्ञान सहज ही मिल जाता है जिससे उसका वर्तमान व भविष्य दोनों ही श्रेष्ठ बन जाते हैं।

जिसमें नहीं है ज्ञान, वह नर पशु समान

मानव जीवन का श्रृंगार ज्ञान ही है। जब ज्ञान ही मनुष्य में न रहे तब क्या मनुष्य मनुष्य कहलाने योग्य रह जाता है? ऐसे उत्तम जीवन को पाकर भी सार तत्व या आध्यात्मिक ज्ञान को नहीं समझा, न ही परमात्मा को पहचाना तथा अपने कल्याण का प्रयत्न भी नहीं किया तो आखिर मानव जीवन में किया क्या? आहार,निद्रा, भय आदि पशु-पक्षी और मानव में समान ही हैं, फर्क सबसे बड़ा यही है कि इन्सान को भगवान् ने विशाल बुद्धि दी है, उसी बुद्धि के द्वारा मानव हर प्रकार का ज्ञान हासिल कर सकता है। अगर आत्म-ज्ञान प्राप्त नहीं किया तो मानव पशु तुल्य ही है।

जिसमें रहेगा ज्ञान–वही करेगा धर्म का काम

मानव मात्र पुरानी रुढ़ीवादिता और अंधश्रद्धा में रहकर ही कुछ भी मनमत से करते हैं तो समझते हैं हमने बहुत बड़ा धर्म का काम किया है जबकि मानव का वास्तविक धर्म क्या है, यह सब कुछ भूले हुए हैं। इनकी बुद्धि भले बुरे की पहचान भी नहीं कर पाती। इसलिए बेचारे धर्म-कर्म में बहुत आस्था रखते पर जानते जरा भी नहीं कि धर्म क्या है, श्रेष्ठ कर्म क्या है? ऐसे समय भगवान् स्वयं आकर ब्रह्मा तन का आधार लेकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते, वे ही धर्म की व्याख्या बतलाते कि वास्तव में धर्म क्या है। मन,वचन, कर्म से किसी को दुःख न देते हुए सभी के लिए शुभ कामना रख कार्य करना ही सच्चा धर्म है।

ईश्वर की कराता पहचान–बस, यही आध्यात्मिक ज्ञान

मानव जीवन की आधारशिला सिर्फ ज्ञान ही है। मानव जीवन का विकास तभी संभव है जब मानव इस ईश्वरीय ज्ञान को ग्रहण करता है। इस ज्ञान के द्वारा सतचित् आनन्द और सुख-शांति की प्राप्ति सहज ही हो जाती है। जीवन का लक्ष्य परम पिता परमात्मा से मिलना है क्योंकि उनसे मिलकर स्वर्ग के वर्से के अधिकारी तो बनते ही हैं, साथ ही बेहद की प्राप्ति भी करते हैं। परन्तु प्रश्न उठता है उस परमात्मा से मिलें कैसे? उसकी पहचान ही जब किसी को नहीं मालूम तब परमात्मा को कैसे याद करें? ऐसी दशा देख बेहद के रहमदिल बाप ने संगमयुग में आकर अपना परिचय देकर माया से छुड़ाया। हर मानव जो पतित बन गया था उसे पावन बनाने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान वास्तव में कितना श्रेष्ठ,कितना महान् भी है!

ज्ञान नहीं तो जहान नहीं

विश्व की हर स्थिति का बारीकी से अध्ययन किया जाए तो देश की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक पद्धति पर विचार करने का अवसर मिलता। तब यही निष्कर्ष निकलता कि किसी भी देश या विश्व का संचालन ज्ञान के बिना संभव नहीं। देश का संचालन कोई व्यक्ति विशेष नहीं करता बल्कि उसका ज्ञान ही संचालन कार्य का सहयोगी है। बिना ज्ञान के मानव एक कदम भी सही नहीं चल सकता। फिर भला यह जीवन लगभग ६०-७० वर्षों का तो रहता ही है, उसे कैसे बिता सकते हो? ज्ञान के बिना कोई मूर्ख तो कोई नालायक

कहलाते। शिव भगवान् का ज्ञान धारण कर नालायक भी स्वर्ग के लायक बन जाता—यही तो कमाल है इस गीता ज्ञान में।

ज्ञान का दान—सबसे महान

दुनिया में दान तो सभी करते हैं। कोई अन्न दान, कोई वस्त्र दान, कोई गौ दान, कोई कन्या दान करता है। पर इन सभी दानों में ज्ञान रत्नों का दान सर्वश्रेष्ठ है। परमात्मा शिव ने हमें जो अविनाशी ज्ञान-रत्नों का खजाना दिया उसके सामने दुनिया के सभी खजाने धूल के समान हैं क्योंकि इस ज्ञान धन की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसका जितना भी अधिक दान करते उतना बढ़ते ही जाता है, कभी कम ही नहीं होता। जबकि दुनिया के कोई भी धन का दान करने से धन में कमी आ सकती है, खत्म भी हो सकता है लेकिन ज्ञान-धन जितना बाँटो उतना बढ़ते ही जाना है। अविनाशी बाप का अविनाशी ज्ञान रत्नों का भंडार सभी के लिये हमेशा खुला ही रहता है, जितना चाहो ले लो, भरपूर हो जाओ, फिर औरों को दान दो। यही सबसे बड़ा पुण्य है। इस ज्ञान-दान से चरित्र का निर्माण व मानव का उत्थान होता है।

सर्व के सहयोग का बड़ा महत्त्व है

बाबा की मीठी वाणी का, आत्माओं में ज्ञानी का,
शुभ संकल्पों के दानी का, सतयुग की महारानी का,
बड़ा महत्व है।

मन्सा में निराकारी का, वाचा में निरअहंकारी का,
कर्मणा में निर्विकारी का, फरिश्ता स्वरूप आकारी का,
बड़ा महत्व है।

योग में श्रेष्ठ स्मृति का, संग-व्यवहार में शुद्ध वृति का,
नयनों में रूहानी दृष्टि का, दृष्टि से दैवी सृष्टि का,
बड़ा महत्व है।

माया रावण से लड़ाई का, श्रीमत रूपी पढ़ाई का,
दुवा रूपी दवाई का, संगमयुग के कमाई का,
बड़ा महत्व है।

योगों में राजयोग का, भोगों में कर्मभोग का,
रोगों में मनोरोग का और सर्व के सहयोग का,
बड़ा महत्व है।

ब्र० कु० अरविन्द, बोकारो

काठमाण्डू—'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' विषय पर आयोजित कार्यशाला में उपस्थित अध्यापकगण ब्र० कु० राज के साथ एक ग्रुप फोटो में।

संभर में आयोजित 'आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का उद्घाटन करने के पश्चात् एस० डी० एम० भ्राता सतीश चन्द्र जी, ब्र० कु० अचल बहन तथा अन्य प्रसन्न मुद्रा में खड़े हैं।

हरिद्वार—जगतगुरु आश्रम के अध्यक्ष स्वामी प्रकाशानन्द जी को आध्यात्मिक संग्रहालय में चित्रों की व्याख्या देती हुई ब्र० कु० मंजु बहन।

दिल्ली (राजौरी गार्डन) के एक स्कूल में आयोजित 'रचनात्मक कार्यशाला' में ब्र० कु० लता बहन अपने सुझाव देते हुए।

ईश्वरीय नियम एवं धारणाओं का महत्त्व

ब्र०कु० राजकुमार, रायपुर (म०प्र०)

हम ब्राह्मण आत्मायें विश्व की उन गिनी-चुनी आत्माओं में से हैं जो इस अलौकिक पथ पर ईश्वरीय नियम और धारणाओं की लाठी या शक्ति के आधार पर अपनी मंजिल की ओर निरन्तर अग्रसर हो रहे हैं। हम देखते हैं कि कई भाई बहन इन दिव्य नियमों पर चलने में मुश्किल महसूस करते हैं। वास्तव में ऐसा केवल इसलिए है कि वे इन ईश्वरीय, दिव्य, अलौकिक नियमों के महत्त्व को नहीं समझते। हम देखते हैं कि लौकिक जीवन में भी इस साकार मनुष्य जगत का प्रत्येक प्राणी किसी न किसी नियम में बंधा हुआ है। यहाँ तक कि पशु, पक्षी, वृक्ष, प्रकृति, सूर्य, चन्द्रमा, तारे सभी किसी न किसी नियम के आधार पर ही कार्य कर रहे हैं। बिना नियम के अनुशासन कायम नहीं किया जा सकता और बिना अनुशासन के जीवन एक बिना पैंदी (आधार-Base) के लोटे के समान है जो कभी इधर तो कभी उधर लुढ़क सकता है, उसमें किसी वस्तु को रखना सदैव संदेहात्मक स्थिति उत्पन्न करता है।

अब हम इस बात पर गहन विचार करें कि नियम, संयम, धारणायें, मर्यादायें हमारे जीवन के लिए क्यों आवश्यक हैं? इसके लिए आत्मा तथा उसकी सूक्ष्म शक्तियों—मन, बुद्धि तथा संस्कार को गहराई से समझना अति आवश्यक है। बुद्धि ऐसी सूक्ष्म शक्ति है जो मन के संकल्पों तथा संस्कारों पर नियंत्रण रखती है। आत्मा जब सतोप्रधान, सम्पूर्ण पवित्र अवस्था में होती है तो बुद्धि शक्तिशाली होने के कारण इन पर सहज ही नियंत्रण कर लेती है। परन्तु जैसे-२ आत्मा नये-२ शरीर धारण कर पुनर्जन्म लेती जाती है, उसकी सतोप्रधानता एवं पवित्रता कम होने के कारण उसकी शक्ति भी क्षीण होती जाती है। परन्तु आत्मा की शक्ति सम्पूर्ण रीति समाप्त न हो जाए, इसके लिए दूर-देशी साधु, महात्माओं, धर्मस्थापकों ने सृष्टि मंच पर आकर अनेक नियम, धारणायें, मर्यादायें बनाई और उन्होंने इनके साथ जोड़ दिया कि इन नियमों पर न चलने से वे परमात्मा द्वारा दंडित किये जायेंगे, ताकि कुछ ऐसी बातें तो रह ही जायें जिन्हें बुद्धि भयवश ही सही परन्तु मन आदि से मनवाती रहे और आत्मा की शक्ति का ह्रास चरम सीमा तक न हो जाए। इसलिए ही हम देखते हैं कि भक्ति या अन्य सभी धर्मों में व्रत, उपवास, प्रार्थना, पूजा-अर्चना आदि के नियम होते हैं। कहा भी जाता है—**जो स्वयं को नियम, संयम प्रमाण चलाता है, वह सदा यम अर्थात् विपत्तियों के समय स्वयं की रक्षा अर्थात् अपने मनोबल को गिरने से बचा सकता है।** इसलिए यह उक्ति भी प्रसिद्ध है कि धर्म में बहुत शक्ति होती है (Religion is might)। धर्म कुछ निश्चित धारणाओं को ही कहा जाता है। इस प्रकार जो आत्मा धारणाओं, नियमों पर नहीं चलती, वह एक प्रकार से स्वयं को ही निर्बल, शक्तिहीन बनाती है।

सृष्टि चक्र के इस अंतिम पहर में अब स्वर्ग के रचयिता परमप्रिय शिव परमात्मा (Heavenly God Father) आकर राजयोग द्वारा हमें बैकुण्ठ का राज्यपद दे रहे हैं। इसके लिए शिवपिता परमशिक्षक रूप से हमारे ही कल्याणार्थ हमें इन दिव्य नियमों, धारणाओं, मर्यादाओं तथा श्रीमत पर चलने की शिक्षा देते हैं ताकि सर्वप्रथम हम अपनी बुद्धि की शक्ति बढ़ाकर स्व पर अर्थात् मन, संस्कार आदि पर राज्य करना सीख जायें और हम नवयुग में सम्पूर्ण मर्यादा पुरूषोत्तम बनकर जा सकें। शिव भगवानुवाच—"जो आत्मा इस महानतम गुप्त संगमयुग (कलियुग, सतयुग के संधिकाल) में स्वयं को पूर्णतः ईश्वरीय नियमों अनुसार चलाती है, वही सतयुग में विश्व महाराजन, महारानी पद प्राप्त करती है।

हम अति महान् भाग्यवान आत्मायें हैं जिन्हें कि इन ईश्वरीय नियमों पर चलने का असीम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अतः हमें चाहिए कि हम इन नियमों के पीछे छिपे इनके गुह्य महत्त्व को जान महान् देवपद प्राप्त करने का तीव्र पुरुषार्थ कर स्वयं का कल्याण करें।

भिलाईनगर में नव-निर्मित 'राजयोग भवन' का उद्घाटन करते हुए दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, ई० वि० वि०।

अतीन्द्रिय सुख

ब्र० कु० उर्मिला, चण्डीगढ़

कालचक्र के साथ घूमती हुई सभी आत्माएँ चारों युगों को पार कर वर्तमान समय संगमयुग पर आ पहुंची हैं। विभिन्न युगों में समय और परिस्थितियों के अनुसार हमें विभिन्न प्राप्तियाँ हुई हैं। सतयुग के सम्पूर्ण सुख-शान्ति-पवित्रता के ईश्वरीय अधिकार का सम्पूर्णानन्द लिया तो द्वापर कलियुग में रावण के आगे अपने को समर्पण कर उसके वर्से,रोग पीड़ा, दुःख अशान्ति के भी अधिकारी बने और अब कलियुग-परिवर्तन के वर्तमान संगमयुग के स्वर्णिम काल में प्रभु-मिलन के अपने अधिकार को पल-पल हृदयंगम कर रहे हैं।

इस युग की सबसे बड़ी प्राप्ति 'अतीन्द्रिय सुख' जिसके वर्णन और गायन से शास्त्र भरे पड़े हैं, जिसको पाने और अनुभव करने का हर मानव पिपासु है, हमें वर्से और वरदान के रूप में मिला है। यह वह अद्वितीय सुख है जिसके आगे कलियुग का क्षण-भंगुर राज्य तो क्या, सतयुग का दैवी राजसिंहासन भी फीका-फीका लगता है! मन निश्चल हो जाता है और हर संकल्प 'पाना था सो पा लिया' का भाव लिए रहता है। सर्व कामनाओं, विकृतियों से दूर हुआ मन अपने को सर्वसमर्थ और बाप समान महसूस करने लगता है। वर्तमान हीरे तुल्य घड़ियों में हम सभी पद्मापद्म भाग्यशाली ब्राह्मण इसके चाहने वाले, माँगने वाले, इन्तजार करने वाले नहीं हैं, वरन् अधिकारी हैं।

हम सभी जानते हैं, संगमयुग कामनाओं का नहीं, कमाई का युग है। यहाँ हर पल, हर घड़ी सीखते रहना है। 'मैं-पन' का सम्पूर्ण त्याग करना है, देते जाना है, सभी कुछ सहन करना है। ईश्वरीय पढ़ाई की खुशी और अलौकिक मस्ती, हरेक को सम्मान दे नम्र बनना, वस्तु-वैभव, परिस्थिति, व्यक्ति से शिक्षा लेते रहने में ही अतीन्द्रिय सुख समाया है। कोई भी अल्पकाल की प्राप्ति की, चाहे मान-शान की, वस्तु-वैभव की, व्यक्ति की कामना पढ़ाई से ध्यान हटा देगी। जिसके लिए भगवान कहते हैं—कामना रखना माना कच्चे फल को खा लेना, कामना माना कामविकार का अंश, कामना माना इच्छा, और इच्छा कभी सुखदाई नहीं हो सकती। हर घड़ी हम चेक करें कि कहीं अपने बारे और बाबा के प्रति चिन्तन के अलावा किसी व्यक्ति वस्तु का चिन्तन तो नहीं चल रहा है? घर जाने के अतिरिक्त कोई दूसरी लालसा तो जागृत नहीं हो रही है?

अगर कोई सुषुप्त इच्छा है, जो समाप्त नहीं हुई है पर दबी हुई है, तो उसकी पूर्ति होते ही अहंकार आ जाएगा और पुरुषार्थ ढ़ीला हो जाएगा। अतः किसी के कहने से या दबाव में आकर कामना का काम तमाम नहीं करना है वरन् अन्दर में यह पक्की धारणा रहे कि एक ही तो इच्छा थी—'बाप को पाना', वही पूरी हो गई। तो और चाहिए भी क्या? भगवान् को भूलकर दूसरी तमन्नाएँ रखना ऊँचे से ऊँचे भगवान् का डिसरिगार्ड ही तो है। द्वापरयुग के प्रारम्भ में महज आत्मिक बल से प्रदत्त ज्ञान में तथागत ने भी यही सन्देश दिया था—'इच्छा ही मनुष्यों के दुःखों का कारण है।' सर्वशक्तिमान भगवान् ने भी हमें यही मन्त्र दिया है—''इच्छा मात्रम् अविद्या भव।''

अल्पकाल की लालसाओं, कामनाओं के अतिरिक्त अलबेलापन भी लगातार प्राप्त होते इस सुख की डोरी को काट देता है। ऐसा तब होता है जब हम मनुष्यात्माओं के साथ अपनी तुलना करते हैं कि अमुक की ज्ञान-योग-धारणा-सेवा की अवस्था से तो मैं काफी आगे जा चुका हूँ। यह संकल्प आते ही सुख की डोरी ढीली हो जाती है क्योंकि देहधारियों के साथ तुलना या तो ईर्ष्या या अहंकार पैदा कर देती है और अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति कराने वाले बाप से दूर कर देती है। हमारा आदर्श कोई मानव नहीं वरन् स्वयं सर्वशक्तिमान भगवान् है। हमने किसी इन्सान समान न बनकर बाप समान बनना है। अपनी तुलना करनी है बापदादा से, बाबा और मम्मा से जिसके लिए बाबा घड़ी-घड़ी 'फालो फादर मदर' कहकर ध्यान खिंचवाते हैं। अव्यक्त बापदादा के महावाक्य हैं—''क्या करूँ, कैसे करूँ सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है—'फालो फादर'। ब्रह्मा का जीवन ही एक्युरेट (यथार्थ) कम्प्युटर है। इसलिए क्या, कैसे के बजाए जीवन के कम्प्युटर से देखो तो प्रश्नचित्त के बजाए प्रसन्नचित्त हो जाएंगे।''

२१ जन्मों के लिए प्राप्तिस्वरूप बनाने वाले इस वर्तमान अध्ययनकाल में हमें सहनशीलता, त्याग, तपस्या, सेवा, धीरज, समाने, सामना करने, सहयोग देने-लेने रूपी पाठों को बार-बार दोहराते जाना है। हम यह कह नहीं सकते कि यह तो हम सीख चुके हैं, इसे फिर नहीं पढ़ेंगे या उसके प्रति लापरवाह हो जाएँ। सभी कुछ कर चुकने, देख चुकने, सीख चुकने का भाव ही जीवन में निराशा, कुण्ठा और हीन-मन्सा का

जन्मदाता है। यही भाव उत्साहहीन और पंगु बनाकर आत्मा के अलौकिक सुख को छीन लेता है।

भगवान् कहते—धीरज धर मनुआ धीरज धर .... यह सुख के दिन सतयुगी प्रारब्ध के सुखदाई दिन हैं, पढ़ाई के बाद पद प्राप्ति के आनन्ददाई दिन हैं। परन्तु संगम का सुख है सीखने और पढ़ने का सुख। यहाँ हम मालिक हैं अपने आपके, अपने मन, बचन, कर्म और भावनाओं तथा कामनाओं के। अगर मालिक के बजाए इन्द्रियों के दास बन गए तो सतयुगी प्रारब्ध तो कम हो ही जाएगी, संगमयुग के अलौकिक वर्से प्रभुमिलन के सुख, अतीन्द्रिय सुख, स्वस्थिति के सुख से भी वंचित हो जाएंगे।

कलकत्ता—'सहयोग एवं सुखमय संसार' विषय पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया। यह चित्र उसी अवसर का है।

रायपुर में आयोजित 'विश्व कल्याण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का उद्घाटन दृश्य।

"........बसन्त बना रहे हैं हम"

भर के रूहों में सुगन्ध पावन,
बहा के संकल्पों की पुनीत पवन;
कर के दिव्य ज्योत की आभा अनूप,
सजा के सुकर्मों का विहँसता स्वरूप;
तुम करो तैयारी...पर
यहाँ खुद रूप बसन्त कहला रहे हैं हम।
तुम मनाने की कहो,
पर यहां स्वयं को बसन्त बना रहे हैं हम।
अलौकिकता से हरा भरा जीवन,
अतिन्द्रिय सुख में सराबोर मन;
अशरीरीपन के गुन्चों पे हो विराजमान,
सत्य ज्ञान गुंजित मधुर कोकिल गान;
तुम करो बात पुष्पों की
यहां खुद को पुष्प बना रहे हैं हम
तुम जुटाओ साधन सुखों के
यहां सुखमय संसार बना रहे हैं हम
हर आत्मन् लगे हमें भाई भाई,
सर्व कल्याणी भाव हर पल ले अँगड़ाई;
रूहानियत की कुछ ऐसी बात, रुके राहगीर हठात्
बने वसुधा सारी मयूर नाच उठे अकस्मात्
तुम किए जाओ बात योजनाओं की,
पर ऐसा योजनाबद्ध जीवन चला रहे हैं हम
तुम करो तैयारी....पर
यहाँ खुद रूप बसन्त कहला रहे हैं हम
तुम मनाने की कहो पर यहाँ स्वयं को बसन्त बना रहे हैं हम
तुम स्वप्न समझते चलो पर साकार किए जा रहे हैं हम

ब्र०कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

काठमाण्डू—बौद्ध भिक्षुओं को आध्यात्मिक संग्रहालय का अवलोकन कराने के पश्चात् ब्र० कु० शीला तथा अन्य उनके साथ एक ग्रुप फोटो में।

बाबा की मेहरबानियां

ब्र० कु० रमा, तोशाम

फरवरी मास, १९८७, दोपहर का समय, होडल सेवा-केन्द्र से ब्र०कु० भाई-बहन देहली में होने वाले 'विश्वशान्ति सम्मेलन' के लिए हमें निमन्त्रण देने आए और हमारी जिज्ञासा को देख प्रतिदिन हमें आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के बारे में अधिकाधिक ज्ञान देने लगे। ज्ञान अर्जित करते-२ ऐसा लगने लगा कि यही तो वह संस्था है जिसके द्वारा परमात्मा शिव पुनः उन नैतिक मूल्यों की स्थापना करा रहे हैं जो प्रायःलुप्त हो गये हैं और जिन नैतिक मूल्यों के लुप्त हो जाने के कारण ही आज मानव सर्व साधन सम्पन्न होने पर भी अशान्त है, परेशान है, दुःखी है, कुंठित है। लेकिन साथ ही मन में विचार उठा कि क्या भाई जी ठीक बता रहे हैं कि भगवान् धरती पर आये हैं? सारा दिन दिल में कशमकश चलती रही और अन्त में फैसला किया यदि बाबा ने हमें भी साक्षात्कार कराया तो हम भी ज्ञान में चल पड़ेंगे।

सन्ध्या के समय जैसे ही मैं सन्ध्या करके दो मिनट के लिए योग में बैठी तो मुझे लाल रंग के मटियाले से प्रकाश में एक प्यारी-सी **लौ** दिखाई देने लगी। मैं आत्मा काफी समय तक उस लौ को बन्द आंखों से निहारती रही लेकिन पहचान नहीं पाई कि यह तो बाबा थे जो सौदा पक्का करने आए थे। अगले दिन तक और रह-२ कर यही सोचती रही कि यह कैसी लौ थी जिसके नीचे न मोमबत्ती थी, न ही कोई दीपक?

अब बाबा से प्यार बढ़ता गया और हमने ब्रह्ममुहूर्त्त में उठना शुरू कर दिया। एक दिन स्नान के बाद जैसे ही मैं योग में बैठी तो थोड़ी देर बाद ही बाबा अपना दिव्य रूप लेकर हमारे सामने **रूहानी** सौदा करने को खड़े थे और शायद मुझे मेरे सभी सत्कर्मों का फल देने आए थे—अपना बनाने, सदा-सदा के लिए!

बाबा के प्रकाश की स्निग्ध, शीतल शान्त किरणें हमें छूकर प्यार कर रही थीं और एक मैं थी—बाबा की अन्जान बच्ची जो उस प्रकाश से बचने के लिए अपने मुँह को इधर-उधर घुमा रही थी और सोच रही थी कि आज सूरज इतनी जल्दी कैसे निकल आया! और जब मैंने ऊपर की तरफ आंख खोल कर देखा तो प्रकाश से परिपूर्ण एक अपरिमित सौन्दर्य मेरे सम्मुख था। कुछ ही क्षणों के बाद सब कुछ लुप्त हो गया और अपने आप ही मेरे नयनों से प्रेम-नीर बहने लगा, मन एक ऐसे आनन्द और मिलन की अनुभूति से भर उठा जिसे याद कर आज भी मैं रोमांचित हो उठती हूँ और बार-२ सोचने को विवश हो जाती हूँ कि आत्मा और परमात्मा का मिलन ही तो सच्चा मिलन है। अमृतबेला प्राप्तियों की वेला है, वरदानों की वेला है, खुले खजानों की वेला है और बाबा से मनो-मिलन मनाने की वेला है।

थोड़े ही दिनों के बाद अमृतवेले ही बाबा ने मुझे अपना स्टार रूप (ज्योति बिन्दु रूप) दिखा कर कृतार्थ किया। इस बार भी बाबा के दर्शनों के बाद मेरे नयन बरबस ही बरसने लगे और बाबा मुझे अपने **ज्ञान स्वरूप** का अनुभव करा गए और बता गए कि आत्मा और परमात्मा का मिलन ही सारे कल्प में श्रेष्ठतम एवं सुन्दर है।

एक दिन फिर जैसे ही हम खाना समाप्त कर चुके तो अनायास ही ऊपर की ओर देखने की इच्छा हुई। तो जैसे ही मैंने नज़र उठाई तो सामने ही मेरे जाने-पहचाने शिव पिता थे। इस बार मुझे सितारे रूप बाबा में 'पवित्रता' एवं 'चेतनता' की विशेष अनुभूति हुई और साथ ही ऐसा महसूस किया कि भोजन की मेज पर बातें नहीं बाबा को याद करना चाहिए और मानो बाबा कह रहे हैं—''बच्ची, शरीर को भोजन देने के साथ-२ आत्मा को भी याद का भोजन देती जाओ तो आत्मा बलिष्ठ हो जाएगी।''

अभी कुछ समय पहले मैं अस्वस्थ अवस्था में चारपाई पर लेटी, कुछ सोई-सी, कुछ जागी-सी बाबा के ध्यान में तकलीफ को भुलाने का प्रयास कर रही थी। तो क्या देखा कि मैं तो चारपाई समेत सफेद प्रकाश के देश में हूँ! चारों ओर अनन्त पावन सफेद प्रकाश में मेरी निगाहें बाबा को ढूंढ रही हैं। मैं बाबा को ढूंढ़ती रही और कुछ ही क्षणों में वह सफेद प्रकाश का देश लुप्त हो गया।

फिर एक दिन प्रातःकाल योग के समय बाबा का स्टार स्वरूप बनाते-२ परेशान होने लगी। तभी बाबा एक अति सूक्ष्म सितारे के रूप में सामने आए और संकल्प उठा कि अगर ऐसे बाबा दिखते रहें तो संकल्प स्वतः स्टॉप (बन्द) हो जाएंगे। लेकिन यह क्या? इस संकल्प के साथ ही बाबा भी अदृश्य हो गये और बाबा मुझे क्या समझाना चाहते थे, वह मैं नहीं समझ पाई।

रात्रि के समय सोने के लिए बिस्तर पर बैठी तो सामने **स्टार**

रूप में शिव बाबा थे। तब से मैं प्रतिदिन परमधाम में जाकर बाबा की याद रूपी गोद में सोने का आनन्द लूटती हूँ।

फिर एक दिन प्रातःकाल चार बजे होंगे। हम नहीं उठे तो क्या देखा, एक प्रकाश बहुत बड़े स्टार के रूप में मेरे सामने है। नींद में ही मैं कहती हूँ कि 'बाबा अभी उठती हूँ' और फिर सो जाती हूँ। थोड़ी देर बाद ही फिर वही स्टार पुनः दिखता है और महसूसता आती है कि यह तो आलस्य है। और मैं झट नींद से उठकर बैठ जाती हूँ लेकिन बाबा अदृश्य हो जाते हैं।

बात लगभग दो माह पहले की है कि मैं प्रातःकाल योग में बैठी थी तो एक हल्का-सा प्रकाश मेरे घुटनों पर आया और मैंने आंख उठाकर उधर ही देखा जिधर से प्रकाश आ रहा था। तत्क्षण मेरा मन बाबा की मेहरबानियों से कृतार्थ हो उठा। जिस प्यारे बाबा से मैं आत्मा मनन-शक्ति द्वारा मिलने का प्रयास कर रही थी, वह बाबा मेरे सम्मुख खड़े मुझे शीतलता प्रदान कर रहे थे और मेरे दिल से आवाज़ आई—

"आपने अपना बनाया, मेहरबानी आपकी।
हम तो इस काबिल ही न थे, कदरदानी आपकी।।"

वास्तव में प्यारा बाबा ही इस बेघर मन का आलीशान घर है जिसमें सुख है, शान्ति है, प्रेम है, पवित्रता है और अति आनन्द है।

कविता

"आपका भी स्वागतम्"

खोलते इस भूमि पर हैं, स्वर्ग का अब द्वार हम ।
'सर्व का सहयोग' करता आपका भी स्वागतम् ।।

माँगते हैं दान कुछ, नव सृष्टि के निर्माण में
दान ही बस, न्यून हो अथवा अधिक परिमाण में
सूक्ष्म का वह दान हो, या दान हो स्थूल का
अवगुणों का या गुणों का, दान काँटे-फूल का

दान करते हैं सुधा, विषपान को स्वीकार हम ।
'सर्व का सहयोग' करता आपका भी स्वागतम् ।।

दान दें संकल्प का, वातावरण की शुद्धि में
ज्ञान का आलोक भी, भर दें सभी की बुद्धि में
एक देंगे दान हम, सेवार्थ जिस भी चीज का
लाख देगा शिव पिता, फलरूप में उस बीज का

यज्ञ में तन, मन और धन, कर रहे बलिहार हम ।
'सर्व का सहयोग' करता आपका भी स्वागतम् ।।

ब्रह्माकुमारी निर्मला, राँची

दिल्ली (लारेंस रोड) सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित 'आध्यात्मिक कार्यक्रम' में भाषण करते हुए प्रेम बहन।

बैंगलोर—जेल में कैदियों को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद जेल अधीक्षक से ज्ञान-वार्तालाप करते हुए ब्र० कु० सुन्दरी बहन।

बीकानेर—'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' प्रदर्शनी में जिलाधीश भ्राता एम० एल० गुप्ता, पुलिस अधीक्षक भ्राता चौहान तथा अन्य को चित्रों की व्याख्या देते हुए ब्र० कु० हंसमुख।

अकोला सेवाकेन्द्र की ओर से नान्दूरा शहर में आयोजित 'सर्व धर्म सम्मेलन' में मंच पर उपस्थित हैं ब्र० कु० सावित्री बहन तथा अन्य।

ईश्वरीय बीमा कम्पनी (बेहद)

[Godly Insurance Company (Unlimited)]

ब्र०कु० राजकुमार, श्रीनगर

इस बीमा कम्पनी का नाम ईश्वरीय बीमा कम्पनी है। अति पुरानी यह कम्पनी इसलिए प्रसिद्ध है, क्योंकि विश्व में यही एक ऐसी कम्पनी है जहां कि पाँच दो और दस लो का हिसाब-किताब है। मतलब स्पष्ट है कि विश्व की अन्य कम्पनियों से यह बोनस (Bonus) एवं ब्याज (Interest) ज्यादा देती है। यह साफ जाहिर है कि परमात्मा को हम पाँच विकारों के अलावा दे भी क्या सकते हैं और देखो, परमात्मा हमें उसके बदले में बोनस और ब्याज (Interest) समेत स्वर्ग की बादशाही देते हैं। यह हो गया न पाँच दो और दस लो का हिसाब-किताब।

रहा सवाल इसके मुख्यालय का जिसके बारे में भी जानना जरूरी है। इसका मुख्यालय माऊण्ट आबू (राजस्थान) में 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के नाम से है। भारत में हर स्थान पर इसकी शाखा (Branch) है ही, विदेशों में भी शायद ही कोई ऐसा स्थान होगा जहाँ इसकी ब्रांच या कारोबार (Business) नहीं होगी।

इस कम्पनी में जितने भी काम करने वाले (सेवाधारी) हैं, सभी दिल से, लग्न से कार्य करते हैं, इसलिए ये विश्व की सब कम्पनियों के कर्मचारियों/अधिकारियों से अधिक वेतन पाते हैं। नाजुक तथा महाविनाश के समय को ध्यान में रखते हुए, अब जल्दी से जल्दी अपना तथा अपने मित्र-सम्बन्धियों का बीमा करायें ताकि पश्चाताप ना करना पड़े।

दूसरी कम्पनियों की तरह यह भी जीवन-मूल्य (Life and Risk Cover करती है) प्रदान करती है। परन्तु इसके साथ-साथ सर्वशक्तिमान शिवबाबा, बीमा कराने वालों के तन-मन-धन की हिफाजत भी करते हैं। इसमें बीमा करने वाला स्वयं सर्वशक्तिमान, सर्व समर्थ, परमपिता परमात्मा शिव हैं तथा शेयर होल्डर (हिस्सेदार) ब्रह्मा, विष्णु और शंकर हैं। इसलिए यह कम्पनी सर्वोत्तम है जिसमें तन, मन व धन तीनों का रिटर्न (इजाफा) पद्मगुणा होकर न केवल एक जन्म में बल्कि २१ जन्मों तक प्राप्त होता है। यह कम्पनी कभी भी बन्द होने वाली अथवा घाटे में (Loss) आने वाली नहीं है क्योंकि इसके संचालक (Director) तथा मालिक स्वयं सर्व खजानों के सागर परमपिता परमात्मा शिव हैं। इस ईश्वरीय कम्पनी में रिश्वत या कोई धोखे की बात ही नहीं है। जैसे कि सुनने में आता है कि दूसरी कम्पनियों में रिश्वत देकर झूठा रिस्क (Risk) बनवा लेते हैं, कर्मचारी कामचोर बन जाते हैं वा जनता से व्यवहार (Public dealing) सन्तोषजनक नहीं होता है तथा खतरे (Risk) के बाद पूरा रिटर्न (Return) नहीं मिलता है। वैसा अन्याय यहां पर नहीं होता है क्योंकि यहां पर स्नेह (Love) तथा संयम-नियम (Law) का सन्तुलन (Balance) है। क्योंकि एक तरफ सर्व प्रकार के खजानों की प्राप्ति कराने वाले वा देने वाले दाता परमपिता परमात्मा हैं तो दूसरी तरफ सम्पूर्ण लाफुल (God of Truth) 'धर्मराज' हैं।

जिस प्रकार दूसरी कम्पनियों में वर्ष में एक या दो बार कम्पनी की हर शाखा का आडिट (Audit) होता है, वैसे यहां पर आडिट के लिये मुख्यालय (मधुबन) में बुलाया जाता है। जिस प्रकार दूसरी कम्पनियों में यात्रा-भत्ता तथा समय-२ पर अवकाश मिलता है, वैसे यहां पर यात्रा-भत्ता मिलता है परन्तु अवकाश नहीं मिलता है। अवकाश करने वालों को घाटा हो जाता है, परन्तु अवकाश ना करने वालों को पद्मगुणा प्राप्ति होती है। दूसरी कम्पनियों में जब किसी शाखा के कर्मचारियों को मुख्यालय में बुलाया जाता है तो उन्हों के मन में एक प्रकार का डर होता है कि ना मालूम किस गलती के कारण मुझे बुलाया गया है ! परन्तु इस ईश्वरीय कम्पनी के मुख्यालय में जाना अर्थात् परम सौभाग्य की लाटरी मिलना है, क्योंकि वहां पर खाने के लिए मीठे-२ आम (ब्राह्मण-भोजन), पीने के लिए ज्ञान-अमृत का मीठा-२ जाम तथा आराम के लिए, न्यारा व प्यारा सुखधाम मिलता है जहां पर सभी आराम (आ+राम) की नींद में सोते हैं।

कई पूछते हैं कि इस कम्पनी में और क्या सुविधाएं मिलती हैं? परन्तु कहना चाहिए कि इस कम्पनी में क्या नहीं मिलता है ! सबसे बड़ी प्राप्ति जो विश्व की किसी कम्पनी से नहीं मिल सकती वह सुख, शान्ति तथा पवित्रता है जोकि यहां पर अति सहज प्राप्त होती है।

(शेष पृष्ठ २७ पर)

मधुबन की महिमा महान्!

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू-पर्वत

प्रकृति की सहज सुषमा और सौरभ लिए भारत में राजस्थान की माऊण्ट-आबू नगरी में स्थित है विश्व का सर्वश्रेष्ठ तीर्थ "मधुबन" जो 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय' का मुख्यालय भी है। इस पावन-भूमि पर जो कोई एक बार भी पग रखता है, वह मधुरता की अमृत-धारा में बह जाता है और बेहद अपनत्व की भावना से अपना घर अनुभव करता है। क्यों न करे, क्योंकि परमात्मा शिव-पिता का घर सो हम सभी बच्चों का घर जो हुआ।

'मधुबन' नाम क्यों?

यहाँ एक ही स्थान पर अनुपम मधुरता से सम्पन्न जीवन का अनुभव और साथ में विकारों से तथा पुरानी दुनिया से वैराग्य होता है। इसी विशेषता से स्वयं परमात्मा शिव ने ब्रह्मा-मुख से इस स्थल का नाम 'मधुबन' रखा। वास्तव में यहाँ ज्ञानामृत के सागर के कण्ठे पर ज्ञानरूपी मधु चखने के लिये विश्व के कोने-कोने से अनगिनत आत्माओं रूपी मधुमक्खियाँ आती ही रहती हैं। आओ तो ऐसे 'मधुबन' की विशेषताओं का अवलोकन करें—

मधुबन विश्व का पावन-धाम है

यह वही भूमि है जो पतित-पावन के परमात्मा के अलौकिक रथ 'पिता-श्री जी' के आवास-निवास, ज्ञान-मुरली और योग्य-तपस्या से पुनीत हो चुकी है। सम्पूर्ण विश्व में यही एक स्थान है जहां कोई भी अपवित्र मनुष्य निवास नहीं कर सकता। एक साथ हजारों पवित्र आत्माओं का नित्य मेला यहीं लगता है। चारों युगों में पार्ट बजाने वाले हीरो एक्टर महान् आत्माएँ इसी भूमि पर एक साथ साधारण रूप में निवास करते हैं।

मधुबन तपोवन है

यहां का वायुमंडल ब्रह्मा की घोर तपस्या से पवित्र, शीतल तथा अनुपम शान्ति के विचार तरंगों से आच्छादित है। यहाँ अखण्ड तपस्या चलती है। वैसे भी आबू को ऋषियों की भूमि कहा जाता है। यहाँ आकर सहज ही किसी का भी मन शान्त हो जाता है। पुनश्च, यहाँ की मनोरम प्रकृति भी तपस्या के लिए परिपूर्ण सहयोग देती है।

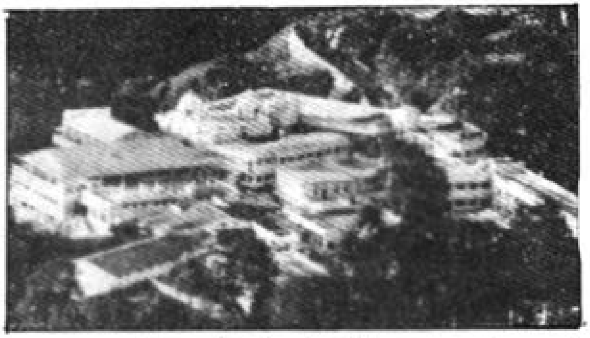

माउन्ट-आबू स्थित ईश्वरीय विश्वविद्यालय का मुख्यालय 'मधुबन' अथवा पाण्डव भवन

मधुबन वरदान भूमि है

वरदाता परमात्मा के वरदान से ही यह भूमि वरदान-भूमि बनी है। यहाँ कठिन से कठिन साधनाएँ व बातें भी सहज हो जाती हैं क्योंकि यहाँ सहज ही ईश्वरीय वरदान प्राप्त हो जाता है। स्वयं शिवबाबा भी यहीं आकर अपने मुख द्वारा अनेक आत्माओं को वरदान प्रदान करते हैं जिससे हर आत्मा वरदानों से झोली भरकर खुशी में नाचने लगती है।

मधुबन परमात्मा की चरित्र-भूमि है

समस्त विश्व में इसी पावन-भूमि को परमात्मा ने अपना कार्य करने का क्षेत्र चुना। यहीं बैठकर उन्होंने नवयुग को रचने की योजनाएँ तैयार कीं। यहीं पर उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा अनेक दिव्य चरित्र किये जिनकी यादगारों से भागवत-शास्त्र भरा पड़ा है।

मधुबन लाईट-हाऊस है

यह पावनधाम प्रकाश (ज्ञान) का हाऊस भी है। यहीं से सत्य ज्ञान का दिव्य प्रकाश समस्त विश्व में फैल रहा है जिससे अनेक जन्मों से माया के घोर अंधकार में गुमराह हुई आत्माएँ सत्यता की राह पर अपनी सम्पूर्णता के मंजिल की ओर अग्रसर हो रही हैं। परिणामतः वे सभी चिन्ताओं के बोझ से लाईट अर्थात् हल्केपन की अनुभूति भी करती हैं।

मधुबन शीशमहल है

जैसे शीशे (दर्पण) में कोई भी चीज स्पष्ट दिखाई देती है, वैसे मधुबन रूपी शीशमहल में आने पर हर आत्मा को अपनी

कमियाँ तथा खामियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं अर्थात् महसूस होती है। यहाँ पर कोई भी अपनी भूल को छुपा नहीं सकता। वास्तव में यह पवित्र स्थान ही अपनी स्थिति को देखने का विचित्र दर्पण है।

मधुबन अनुभवों की खान है

यहाँ आते ही आत्मा अपने वास्तविक ईश्वरीय नशे रूपी शान में स्थित होकर स्वयं को अनुभवों की खान में अनुभव करने लगती है। यहाँ ज्ञान-योग के विभिन्न अनुभव असंख्य मनुष्यों को प्रतिदिन होते हैं। योगाभ्यास सरल लगता है, मन की दिव्यता, भविष्य के विभिन्न स्वरूपों का, परमशान्ति तथा परमानन्द का अनुभव यहाँ सहज ही निरन्तर होने लगता है।

मधुबन में मधुर मिलन स्वयं परमात्मा से

भक्तिमार्ग में तो भगवान् के मात्र साक्षात्कार हेतु भटकते रहे। अभी तो स्वयं भगवान् गुप्त वेश में आकर अव्यक्त रीति से व्यक्त आत्माओं के साथ मधुर मिलन मनाते हैं। ऐसे अवर्णनीय अनोखे मिलन में आत्माओं को भगवान् की प्यारी व सुखदायिनी, निहाल करने वाली नजर मिलती है जिससे माया की नजर उतर जाती है और मनुष्य की नजर भी श्रेष्ठ तथा पावन बन जाती है। यह सौभाग्य केवल यहीं प्राप्त होता है।

मधुबन में बाजे मुरली

यहाँ ही मुरलीधर परमात्मा ब्रह्मा-मुख द्वारा ज्ञान-मुरली सुनाते हैं जिसकी मधुर तान सुनते ही मन रुपी मोर नाचने लगता है। इस मस्तानी मुरली की अनोखी मस्ती सबकुछ भूलाकर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलाती है।

यहाँ कमियों को स्वाहा किया जाता है

यह पावन-भूमि एक अलौकिक यज्ञ भी है यहाँ मनुष्य आकर अपने विकारों को यज्ञ-कुण्ड में स्वाहा करते हैं। यहाँ स्थूल-सामग्री नहीं, मन की बुराइयाँ हवन की जाती हैं जिससे माया की दुखदाई पवन आत्मा को कभी नहीं लगती।

यहाँ आत्मा सच्चा आराम पाती है

वास्तव में मधुबन है परमात्मा की गोद। इस गोद में बैठते ही जन्म-जन्म की थकी हुई आत्माएँ यहाँ सच्चा तन और मन का आराम पाती हैं। क्योंकि यहाँ पर दिल में निराकार राम की स्मृति स्वतः ही निवास करती है जिससे उनका मन शीतल हो जाता है। यहाँ सभी देह तथा देह की दुनिया को ही भूल जाते हैं, यहाँ तक की तिथि-तारीख भी भूल जाती है। इसलिए सदा याद रहे—''जब आत्मा देह भान भूलती, तो अतीन्द्रिय सुख में झूलती।''

मधुबन के मुख्य आकर्षण

(१) **शान्ति स्तम्भ**—ब्रह्मा बाबा की स्मृति में बना हुआ पावन शान्ति स्तम्भ यहाँ का मुख्य शान्ति का दान कराने वाला स्थान है जहाँ से प्रतिदिन हजारों दर्शक आकर शान्ति की अंचली तथा श्रेष्ठ प्रेरणाओं को लेकर जाते हैं।

(२) **बाबा का कमरा**—यहाँ का दूसरा मुख्य आकर्षण केन्द्र है 'बाबा का कमरा' जहाँ पर अनेकों को अनेक ईश्वरीय अनुभव होते हैं, समस्याओं का हल मिलता है और जीवन को सम्पूर्ण दिव्य फरिश्ता बनाने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

(३) **बाबा की झोंपड़ी**—ब्रह्मा बाबा की तपस्या की झलक दर्शाने वाली अनोखी झोपड़ी सभी को महान् तपस्वी बनने की प्रेरणा प्रदान करती है। यहाँ आते ही बाबा के चरित्र साकार हो जाते हैं। सचमुच, यह झोंपड़ी मनुष्यात्माओं की खोपड़ी ही ठीक कर देती है।

(४) **ओमशान्ति भवन**—सबके मन को मोहने वाला ओमशान्ति भवन समस्त विश्व में 'विश्व शान्ति महल' (World Peace Palace) के रूप में प्रसिद्ध होता जा रहा है। यहाँ आते ही एक बार तो कोई भी अशान्त मनुष्य शान्ति के अनुभव में खो जाता है। सचमुच, यह भवन तो मन-भावन है।

मधुबन नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा

यहाँ आने वाले अपने को परम सौभाग्यशाली समझते हैं क्योंकि यहाँ भगवान् के दर्शन होते हैं। चाहे किसी ने समस्त विश्व का भ्रमण किया हो, लेकिन यदि जीवन में इस पावन-भूमि के दर्शन न किये तो मानो उसके जीवन के अध्याय अधूरे ही रह गये। महान् हैं वो आत्माएँ जो इस दिव्य-भूमि की महानता को जानकर कुछेक घड़ियों के लिए भी मधुबन निवासी बनते हैं!

(पृष्ठ २५ का शेष)

जिन्होंने अपना तथा अपने सम्बन्धियों का बीमा अभी तक इस कम्पनी में नहीं कराया है, वे जल्दी से जल्दी इस शुभ-अवसर का लाभ उठाएं। इसके लिये आप प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की विश्व के ५० देशों में लगभग १७०० शाखाओं में से किसी भी शाखा से सम्पर्क करें। सभी एजेन्टस (सेवाधारियों) से भी निवेदन है कि वे ग्राहकों (Clients) को आकर्षित करने की नई-२ युक्तियां निकालें। ऐसी सेवा से ही हम सभी की और अपनी भी जीवन सुखमय बना सकते हैं।

करनाल–'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के अन्तर्गत दलित-वर्ग के लिये आयोजित एक कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ब्र० कु० बृजपुष्पा, ब्र० कु० सत्या बहन तथा अन्य।

जालन्धर में आयोजित गीता-सम्मेलन में ब्र० कु० राज शहर के प्रतिष्ठित नागरिकों के साथ दिखाई दे रही हैं।

दिल्ली (मोती नगर) के एक विद्यालय में बच्चों को 'चरित्र निर्माण' की शिक्षा देते हुए ब्र० कु० ओमिला बहन।

नरेला में आयोजित 'आध्यात्मिक मेले' का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात ग्रहण करते हुए भ्राता हरी राम खत्री, महानगर पार्षद।

सीहोर–महिला अधिकार परिषद् की बैठक में प्रवचन करते हुए ब्र० कु० सुनीता बहन।

केशोद में 'आध्यात्मिक बैंक' का उद्घाटन करते हुए जिलाधीश भ्राता नंदा साहब जी।

कोटकपूरा में आयोजित 'आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए भ्राता जगदीश जी।

हैदराबाद में न्यायाधीशों एवं आध्यात्मवेत्ताओं के लिये आयोजित कार्यशाला में अपने सुझाव देते हुए भ्राता ए० सत्यनारायण जी, मेयर, हैदराबाद।

शिवसागर में आयोजित 'सुखमय संसार' प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता बी० एन० गोहाई जी दीप जलाकर कर रहे हैं।

बड़ौदा में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' का उद्घाटन दृश्य।

मैसूर—सेवाकेन्द्र पर ब्र० कु० भाई-बहनों को 'निरन्तर योगी कैसे बनें'—विषय पर क्लास कराते हुए ब्र० कु० आत्मप्रकाश।

दिल्ली (मजलिस पार्क) शिक्षाविद् सम्मेलन में प्रवचन करती हुई ब्र०कु० राजकुमारी बहन।

दिल्ली (जैतपुर) में आयोजित एक आध्यात्मिक समारोह में *(दाएं से)* ब्र०कु० कमलमणि बहन, ब्र०कु० डा० बलवन्त राय, चौधरी प्रेम सिंह, अध्यक्ष, कांग्रेस (आई), दिल्ली प्रदेश, ब्र०कु० सुन्दरी बहन तथा अन्य।

रूहानी श्रृंगार और श्री लक्ष्मी-श्री नारायण समान सुन्दर बनने के लिए

आइये, इस ईश्वरीय ब्यूटी पार्लर में!

ब्र० कु० मीना, झालावाड़ (राज०)

सर्वप्रथम आप ज्ञान रूपी साबुन आत्मा पर लगायें और योग रूपी जल के शावर के नीचे खड़े हो जाइये जिससे पुराने संस्कारों रूपी मैल धुल जाये। अब शरीर रूपी वस्त्र पर आत्मअभिमानी स्थिति का सेन्ट लगायें। सिर पर ज्ञान मंथन रूपी तेल की मालिश करें, कर्मों रूपी बालों को समेटकर चैकिंग रूपी कंघी फेरकर जूड़ा बनायें। पवित्रता की क्लिप लगायें और संपूर्णता का गजरा लगायें। अब ज्ञान-सूर्य की धूप में एक घंटा खड़े रहें।

तत्पश्चात् ज्ञान की धारणा रूपी पाउडर और अनुभूति रूपी लाली चेहरे पर लगायें। मस्तक पर आत्मस्मृति की बिन्दी लगायें, आँखों में रूहानियत का सुरमा लगायें, नाक में 'बीती सो बीती' की फुल्ली पहनें। हर्षितमुखता रूपी लिपिस्टिक होठों पर सदा चमकती रहे, मुख में दाँतों रूपी ज्ञान-रत्नों को मधुर बोल रूपी ब्रश से प्रतिदिन साफ करें, कानों को ज्ञान फव्वारे से सदा स्वच्छ रखें और ज्ञान रूपी कुंडल धारण करें।

गले में दिव्यगुणों रूपी मोतियों की माला पहनें। बाहों में दृढ़ता का बाजुबन्द पहनें। हाथों में नि:स्वार्थ सेवा का कंगन पहनें। कमर में त्याग, तपस्या का कमर-पट्टा पहनें। आपकी चाल में रूहानी रायल्टी हो, पैरों में फरीश्तेपन की पायल हो।

सुबह उठते ही ज्ञान रूप आइने में स्वस्थिति का मुखड़ा देखें—कहीं चेहरे पर अपनी कमी, कमजोरियों रूपी दाग तो नहीं लगा है? फिर आप नारायणी नशे रूपी चाय का सेवन करें, साथ-साथ दिलखुश मिठाई खायें तो सारा दिन स्फूर्ति बनी रहेगी।

कलाई पर विश्व की घड़ी जरूर बाँधें और बीच-बीच में टाइम देखते रहें—कहीं ऐसा न हो हम श्रृंगार करते रह जायें और संगम का समय बीत जाये। दोनों टाइम ज्ञान रूपी भोजन सन्तुलित मात्रा में करें जिससे आप स्वस्थ और निरोगी रहेंगे तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य आदि बीमारियों से बचे रहेंगे। फीलिंग रूपी फ्लू, तनाव रूपी मस्तिष्क ज्वर, पुराने संस्कारों रूपी मलेरिया के कीटाणुओं से भी आप सेफ (सुरक्षित) रहेंगे। अब बेफिकर बादशाह की कुर्सी पर आराम कीजिए।

अब आप तैयार होकर चलें घूमने सतयुग रूपी क्लब में जहाँ आप विश्व-महारानी श्रीलक्ष्मी और विश्व-महाराजन श्रीनारायण बन २१ जन्मों के लिए राज्य करेंगे।

नोट :- (१) इस ईश्वरीय ब्युटी पार्लर में आने वाले भाई बहिनों से किसी भी प्रकार की फीस नहीं ली जायेगी। (२)आपका श्रृंगार २१ जन्मों तक कायम रहेगा—इस गैरेन्टी के साथ।

पुरी — 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के अन्तर्गत आयोजित एक कार्यक्रम में पधारे शिक्षाविद् ब्र० कु० निरुपमा के साथ एक ग्रुप फोटो में

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओम शान्ति प्रैस, कृष्णानगर, दिल्ली-५१ से छपवाया, Regd No 10563/65-D. (E)--70